मूल्य रु. १०-००
सलंग अंक ९४-९५ फरवरी-मार्च - २०१५

श्री स्वामिनारायण

मासिक
प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

श्री नरनारायणदेव महोत्सव विशेषांक

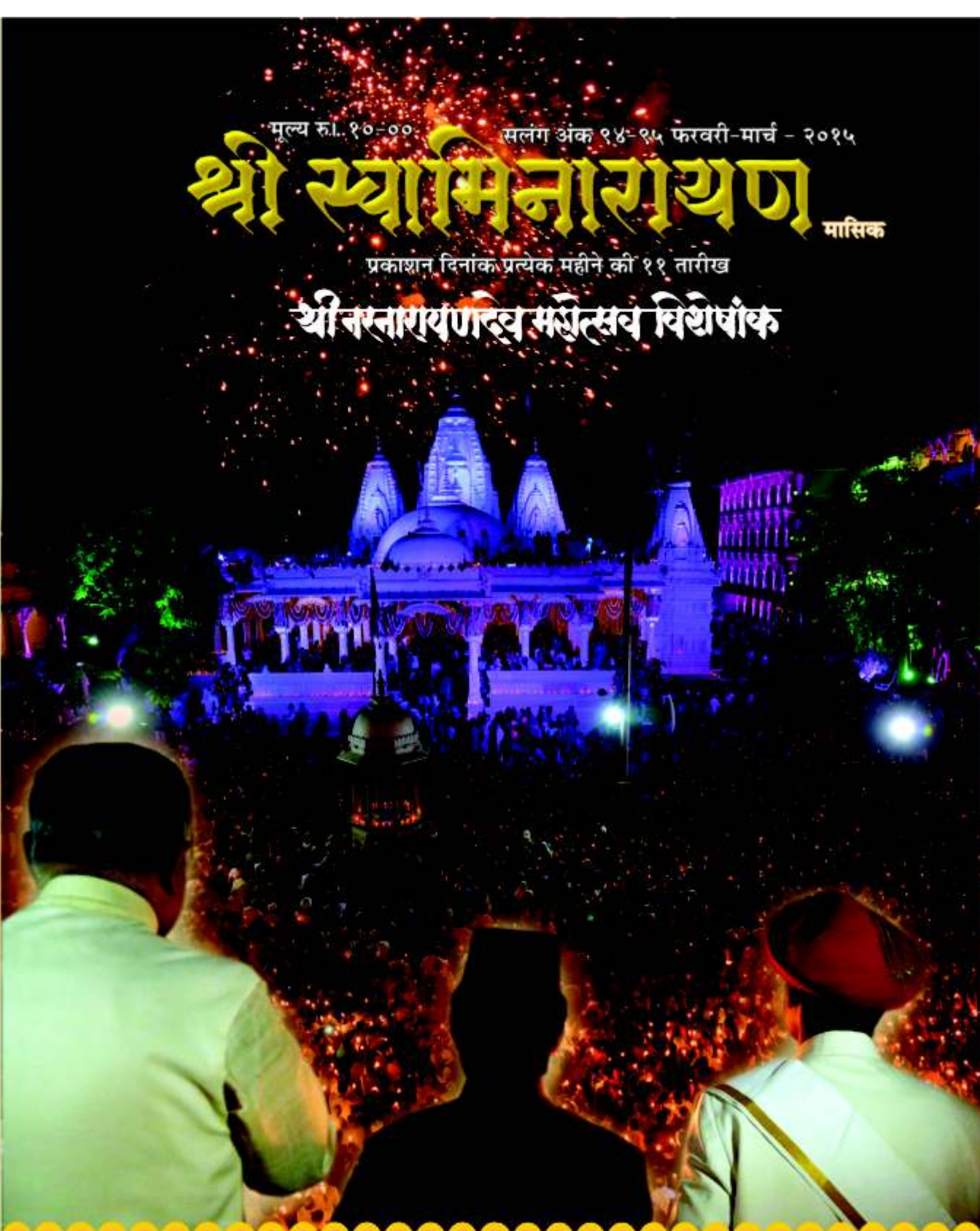

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

आशीर्वादपत्रम्

Koshalendraprasad Pandey

સર્વાવતારી સર્વોપરિ ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણનું સર્વ પ્રથમ સર્જન શ્રી નરનારાયણ દેવનું મંદિર, અને તેમાં પોતાના સ્વહસ્તે સ્થાપિત, પોતાનું સ્વરૂપ એવા શ્રી નરનારાયણ દેવનો ઉત્સવ હંમેશા સર્વોપરિ જ હોય છે. શ્રી નરનારાયણ દેવ પ્રતિષ્ઠાના આયોજિત તમામ ઉત્સવોમાં "દર્શન"નું મુખ્યપણું હોય છે

આ ઉત્સવને સફળ બનાવવામાં પોતાનું તન મન અર્પણ કરનાર સંતો, તન, મન અને ધન અર્પણ કરનાર દેશવિદેશના હરિભક્તો અને વિશેષ રીતે સૌની અનુકૂળતા સરળતા કરનાર સ્વયંસેવકોને અમારા પૂજ્ય પ્રેમપૂર્વક શુભાશીર્વાદ સહ અભિનંદન

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્યશ્રી ૧૦૦૮	પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી	પ.પૂ. લાલજી મહારાજ
શ્રીકોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી	શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી	શ્રી ૧૦૮ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

Shree Swaminarayan Mandir
Kalupur, Ahmedabad - 380001

Shree Swaminarayan Bagh
Memnagar, Ahmedabad - 380053

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - ८ ● अंक : ९४-९५
फरवरी-मार्च - २०१५

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in
मूल्य - प्रति वर्ष ५०-००
प्रति कोपी १०-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	आरोग्य दिन	१०
०४.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन	११
०५.	श्री नरनारायणदेव महोत्सव प्रयोजन तथा फलश्रुति	१९
०६.	पर्यावरण दिन	२५
०७.	शिल्पी आनन्दानन्द स्वामी	२७
०८.	महिला दिन	३१
०९.	सदाप्रगट श्री नरनारायणदेव	३५
१०.	परिवार दिन	३९
११.	उपास्य इष्टदेव की समझ	४७
१२.	कलियुग में सत्ययुग का दर्शन अर्थात् श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव	५७
१३.	भाग्य उस भूमि की जहाँ पर पधारे स्वयं धनी	६३
१४.	श्री नरनारायणदेव महोत्सव एक विशिष्ट उत्सव	७१
१५.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	७३
१६.	भक्ति सुधा	७९

अस्मदीयम्

श्री नरनारायणदेव महोत्सव का स्मरण सभी के हृदय में सदा बना रहेगा। इस तरह के उत्सवों को मनाने का एक ही कारण है कि अनेक जीव महाराज के आश्रित बने और धीरे धीरे सत्संगी होकर अपना आत्यंतिक कल्याण कर सके। इसी हार्द से इस तरह के उत्सव मनाये जाते हैं। पांच दिन तक इस महोत्सव में हजारो मुमुक्षुओं ने देवदर्शन, धर्मकुल दर्शन, कथाश्रवण, महाविष्णुयाग, महापूजा, अखंड धुन इत्यादि में बैठकर अपने जीवन को सार्थक किया है। अपने सभी उत्सव एक से बढकर एक मनाये गये हैं।

स.गु. आनंदानंद स्वामीने संप्रदाय में सर्व प्रथम श्रीहरि की आज्ञा से अहमदावाद शहर में भव्य तीन शिखर का मंदिर निर्माण करवाया था। श्रीजी महाराजने १८७८ फाल्गुन शुक्ल-३ को स्वस्वरुप श्री नरनारायणदेव को अपनी बांहो में भरकर प्रतिष्ठित करके सभी के लिये मोक्ष का मार्ग खोल दिया। अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री हमेशा परमकृपालु श्री नरनारायणदेव को ही आगे रखते हैं। कारण यह है कि श्री नरनारायणदेव स्वयं श्रीहरि ही है।

हम बारवार श्री नरनारायणदेव का मुख्यपना रखते हैं, उसका यही कारण है कि श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम अक्षरधाम के धामी हैं जो श्री नरनारायणदेव है वे ही इस सभा में नित्य बिराजमान रहते हैं। उन्हीं में मुख्यपना लाते हैं और उन्हीं में हमारा रुप समाया हुआ है। इसलिये लाखों रुपये खर्च करके शिखरी मंदिर श्री अहमदावाद में निर्मित करवाकर श्री नरनारायणदेव की मूर्ति को सर्व प्रथम प्रतिष्ठित किया है।

इसलिये हमें चाहिये कि ऐसे देव को छोड़कर अन्यत्र न जांय, इन्हीं में सर्व सुख समाया हुआ है। श्री नरनारायणदेव महा महोत्सव का जिन लोगो ने दर्शन किया है, उनके मुख से ही शब्द सुनने को मिलता है कि हमारे जीवन में ऐसे उत्सव का सुख मिला है यह सुख अन्यत्र कहीं सम्भव नहीं है।

इस उत्सव के विशेषांक द्वारा उत्सव की स्मृति बनी रहे तथा अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, तथा भावि आचार्य लालजी महाराजश्री के सानिध्य में इसी तरह उत्सव मनाया जाता रहे इससे लाखों लोगों का श्रेय हो ऐसी परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जनवरी-२०१५)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर केरा (कच्छ) पदार्पण ।

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर बावला-लवारपुर कथा प्रसंग पर पदार्पण ।

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कुहा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

४ सायंकाल भुज (कच्छ) पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

५ कडी गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण ।

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर संस्कारधाम हाथीजण पारायण प्रसंग पद पदार्पण ।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर निकोल महापूजा प्रसंग पर पदार्पण
प.भ. हितेषभाई के यहाँ पदार्पण, शिलज

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर जामसर (हालार) शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण वहा से उनावा पदार्पण ।

१० विश्वमंगल गुरुकुल कलोल-कल्याणपुरा कथा प्रसंग पर पदार्पण ।
सायंकाल - श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजलि शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

११ भीमपुरा गाँव में पदार्पण ।
दोपहर में श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर सेक्टर-२ पदार्पण ।
सायंकाल श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा द्वारा आयोजित शाकोत्सव प्रसंग पर केम्पस में पदार्पण - सोला

१२-१३ गोलिया (राज.) से वाली श्री स्वामिनारायण मंदिर संत हरिभक्तो की पदयात्रा में आशीर्वाद देने के लिये पधारे ।

१४ से १८ कलिवलेन्ड (अमेरिका) प.भ. श्री प्रकाशभाई पटेल की खबर लेने के लिये
२० श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२१ इन्द्रपुरा गाँव में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
सायंकाल श्रीनाथद्वारा पदार्पण ।
२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर नाथद्वारा पाटोत्सव-पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर उवारसद कथा प्रसंग पर पदार्पण ।
२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली वसंत पंचमी के उत्सव में पदार्पण ।
२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
३० घोडासर हरिभक्तो के यहाँ पदार्पण ।

(फरवरी-२०१५)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोखासण कथा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण
२ श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
३ श्री स्वामिनारायण मंदिर वीजापुर (वजीबा) में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पद
४ श्री स्वामिनारायण मंदिर गोठीब (पंचमहाल) पदार्पण ।
५ श्री स्वामिनारायण मंदिर भाऊपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
६ श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
७ लींबडी-रणजीतगढ (मूलीदेश) गाँव में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
८ श्री स्वामिनारायण मंदिर लुणावाडा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
९ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१० श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
११ श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रतापपुरा (कलोल) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा कथा प्रसंग पर पदार्पण ।
१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर महिसा वासणा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१८ मोटेरा गाँव में पदार्पण ।
१९-२० श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) पदार्पण ।
२१ परमकृपालु श्री नरनारायणदेव (कालुपुर मंदिर) के १९३ वें पाटोत्सव को
अपने वरद हाथों से संपन्न किये ।
श्री स्वामिनारायण म्युजियम स्थापना दिन को अपने हाथों से संपन्न किये ।
२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहेनोके) बालासिनोर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कुकरवाडा कथा प्रसंग पर पदार्पण ।
२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर टांकीया कथा प्रसंग पर पदार्पण ।
२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापूनगर) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२८ मुंबई पदार्पण ।

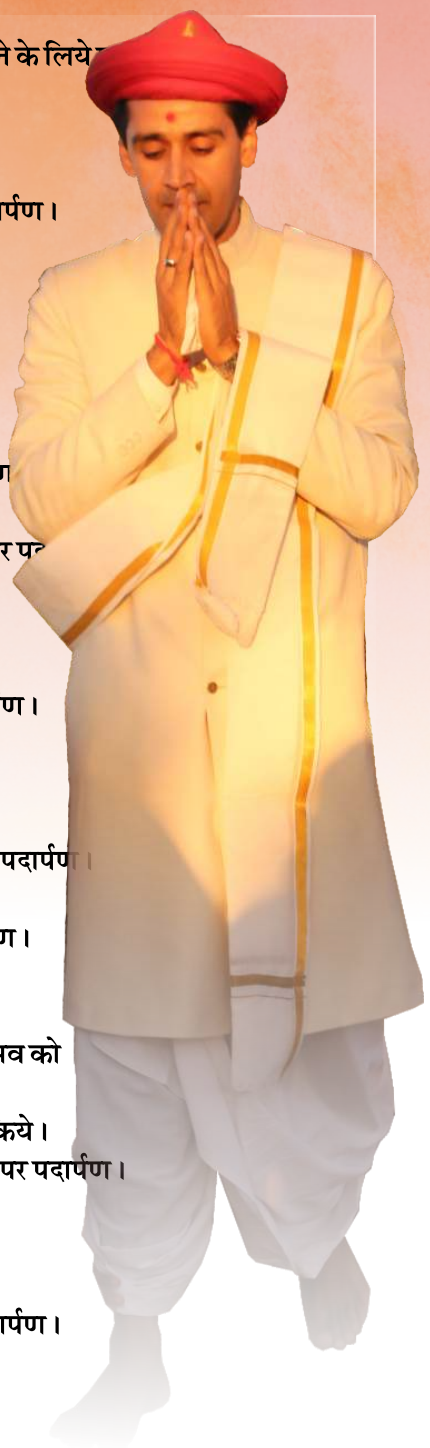

तैयारी

पोथीयात्रा

उद्घाटन

आरोग्य दिन

श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से

अमृतवचनो

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा
(हीरावाडी-बापुनगर)

श्री स्वामिनारायण भगवान ने विश्व का सर्व प्रथम स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में बनवाया था। उसी प्रकार श्री स्वामिनारायण भगवान तथा नरनारायणेव में कोई अंतर नहीं हैं. यही महाराज का वचन है। देव के लिए जो सुवर्ण का सिंहासन बनाया गया, मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ उसमें देव को कोई फर्क नहीं पडता। सुवर्ण हो या लोहा उसको बनानेवाले भगवान हैं। इसीलिए हम देव को क्या दे सकते हैं ? सुवर्ण से भगवान को नही तोला जा सकता। परंतु उसके पीछे जो भावना है वह महत्वपूर्ण है। सुवर्ण देकर भी हम देव पर कोई उपकार नही करते हैं। भावपूर्वक देव को जो भी प्रदान किया जाय वह उसे स्वीकार्य करते हैं। क्योंकि हमारा एक एक श्वास तथा हमारा अस्तित्व नरनारायणदेव के कारण ही है। इसीलिए हम देव के सदैव ऋणी है। इसीलिए जिन यजमानो ने सिंहासन तथा जीर्णोद्धार में अपना योगदान दिया है वे धन्यवाद के पात्र है। मंदिर के जीर्णोद्धार के साथ-साथ इन उत्सवों के माध्यम से हमारे जीवन का भी जीर्णोद्धार होता है।

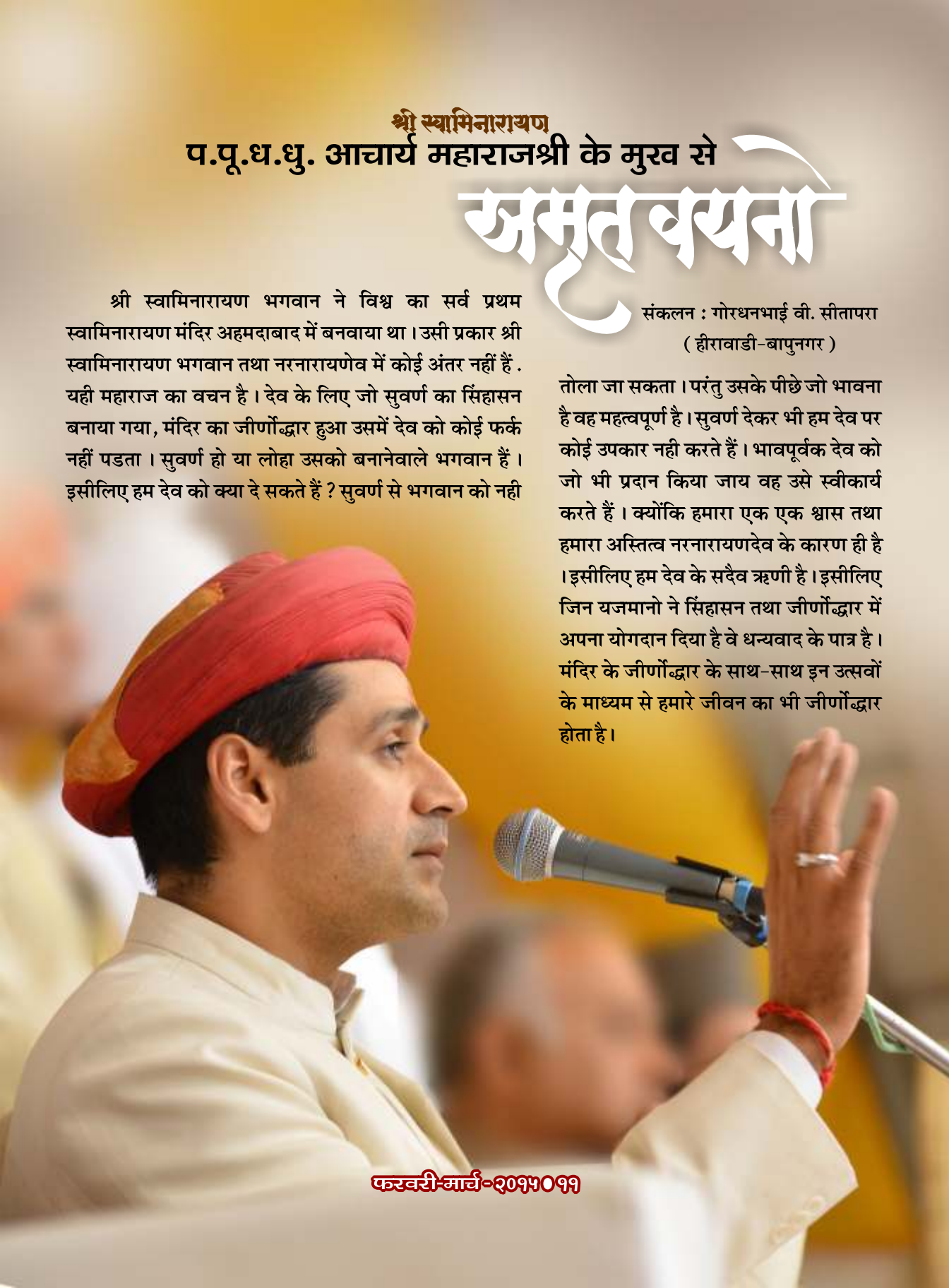

श्री नरनारायणादिक देवों के सुवर्ण सिंहासन में कुछ भक्तों ने सुवर्ण की अंगुठी, नाक की नथुनी पाँव की पायल आदि गहने भी दिये थे। सुवर्ण सिंहासन में जो चमक दिखाई दे रही है वह मात्र सुवर्ण की नही परंतु ऐसे भक्तों के समर्थ भावना की भी है।

कुछ लोग पैसों का विरोधकरते हैं। परंतु पैसे बिना गाड़ी का पेट्रोल या डिजल नहीं आता। इसीलिए कोई वस्तु, पदार्थ या टेकनोलोजी खराब नहीं है परंतु उनका उपयोग हम लोग किस प्रकार करते हैं वह अधिक महत्वपूर्ण है। पत्तल में भोजन करना कोई त्याग नहीं है। परंतु हम देव को कितने समर्पित है वह ज्यादा महत्वपूर्ण है। हमारे संतगण देव को समर्पित है। देव की आज्ञानुसार ही उनका आचरण है। हरिभक्तों की भावना प्रेम, मुख की प्रसन्नता ही हमें ३६५ दिन कार्य में मग्न रखने में सहायक है। शिक्षापत्री खोलकर देख लिजिए महाराजने हमे यह काम करने की तो आज्ञा ही नहीं दी है। मूर्ति प्रतिष्ठा करके गुरुमंत्र लेकर ए.सी. चालु करके भी हम रह सकते हैं। परंतु नहीं आप सभी भगवान के हैं तो आचार्य आपके हैं। क्योंकि आचार्य भी देव के ही है। इसीलिए हम सभी एक परिवार है। कुछ लोग कहते हैं कि आप यहाँ कभी तो नहीं रहते। तो हम कहते हैं कि यह संस्था बिकाउं नहीं है। हम तो भगवान के है। और भगवान के लिये ही कार्यरत रहते हैं। श्री नरनारायणदेव का देश विदेशो में सत्संग की व्यापकता है मूल-कर्ताधर्ता पू. बापुजी है। उनके परिश्रम के कारण ही आज हमें पका आम खाने को मिल रहा है।

हम दो दिन पहले रसोई की तरफ चलते हुए जा रहे थे। मार्ग में दो बहनें और एक माताजी जनमंगल नामावलि खोलकर खूब मगन होकर पाठ कर रही थी। वे भक्तिभाव में इतना डूबी हुई थी की हमारी तरफ नजरे करके देखा भी नहीं और अच्छा ही था कि हम भी उन्हें नही जानते थे। परंतु इस घटना का उल्लेख करनेका तात्पर्य यही है कि आज सत्संग की वृद्धि, सफलता इन्ही लोगो जैसे हरिभक्तो की एकान्तिक भक्ति का परिणाम है। बाकी नाटक तो लोगो को एकत्र करके भी किया जा सकता है। किसी बोलीवुड के एक्टर को बुलाया जाय तो वैसे भी समस्त अहमदाबाद एकत्र हो ही जायेगा। परंतु मेदनी एकत्र करना हमारा लक्ष्य नहीं है, हमें तो भगवान के सच्चे भक्तों की मेदनी चाहिए। हमारा यह सत्संग परिवार है, किसी का भी अवगुण कभी भी नही ग्रहण करना चाहिए। सभी के गुण को ही ग्रहण करना चाहिए। कंठी पहने मात्र से ही कोई सत्संगी नही हो सकता। सत्संग की परिपक्वता लंबी प्रोसेस है। दो, पांच, दस, बीस इस प्रकार लंबे टाईम तक सत्संग में रहने से प्रकृति का स्वाभाविक प्रकृति के दोष कम होते हैं। कोई भी भक्त अमीर हो या गरीब कभी भी उसका अपना नहीं करना चाहिए। हमें किसी के जज बनने की कोई आवश्यकता नहीं है। कोई दो जपमाला

कम करें या दो दंडवत कम करे उसका हिसाब-किताब करना हमार कार्य नहीं है। यदि कोई हमारी टीका करता है तो समझना चाहिए कि उस व्यक्ति के पास स्वयं से ज्यादा दूसरो को देने के लिए व्यर्थ समय अधिक है।

उत्सव में राजस्थान, पंचमहाल, साबरकांठा, कच्छ तथा अनेक स्थानो से भक्तजन पधारे हैं। इसीलिए देश-प्रदेश के हरिभक्तो की सभा है। राजस्थान के लाल पधड़ी वाले भक्तगण ऐसे भक्तगण है जो श्रीमंत लोगो के बेडरुम से भी छोटे मंदिरो में उत्सव, पूजा, सत्संग धूम-धाम से भक्तिपूर्वक मनाते हैं। यहाँ तक की उत्सव के जो लाडु आप लोगोने खाये उसके लिए अच्छा घी भी वही से आया है। तन, मन, धन से भी अधिक जो समय का दान है वह अति मूल्यवान है। महंत स्वामी जब यज्ञ के यजमान की घोषणा करते है तो यजमान कहते है कि दो लाख रुपये ले जाईये। परंतु यज्ञ में बैठने का समय नही है। और पीठ में दर्द होता है। एक ही स्थान पर बैठकर चार-पाँच घंटे तक भगवान की कथा का श्रवण करने से श्री नरनारायणदेव के तपस्या रुपी फल आपको प्राप्त होता है।

कुछ भक्तजन महाराज के नाम का मंत्र जब करते हैं। यह भी उत्तम मार्ग है। महाराज कोई गणित के शिक्षक नही है कि आजके मंत्रो का हिसाब किताब रखे। इससे उत्तम मार्ग यह है कि महाराज का ही स्मरण करते रहे। कुछ लोग तो इतनी तीव्र गती से जप माला घुमाते है कि ऐसा लगता है कि अभी माला गौमुखी में से बाहर आ जायेगी। इसका कारण यह है कि उनका दिमाग भी सदैव तीव्र गति से दौड़ता रहता है। दो माला भले कम करें परंतु महाराज की मूर्ति में मन लगाकर एकाग्र चित से पूजा पाठ करने से शिर का दर्द कम होता है।

जेतलपुर की गंगा माँ भी महाराज के प्रति इतनी अनन्य भावना वाली थी कि महाराज को सदैव गरम गरम भोजन खिलाती थी। एक बार गंगा माँ बाहर गयी थी। महाराजने गंगा माँ के घर के स्थान पर मंदिर बनाने हेतु उनका घर संतो, पार्षदो तथा हरिभक्तो की सहायता से गिरा दिया। गंगा माँ जब वापस लौटी तो सभी पर बहुत गुस्सा किया। एक सत्संगी द्वेषी बाबा को लगा की यह उचित समय है गंगा माँ को महाराज के खिलाफ भड़काने का। उस बाबाने गंगा माँ से कहा कि मैं तो पहले से ही कह रहा हुँ कि ये स्वामिनारायण ठीक नहीं है। गंगा माँ ने एक पत्थर उठाकर बाबा के शिर पर मार दिया। गंगा माँ ने कहा यह हमारे परिवार का मामला है। तुझे बीच में बोलने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं अपने पुत्र से जो कुछ भी कहूं। परिवार में एक दूसरे से कोई कुछ भी कहे सब एक दूसरे के होते हैं। अहमदाबाद, मूली, भुज का तंत्र भिन्न है परंतु हमारा हृदय तो एक ही है।

स्वयं सेवको की सभा में प.पू. महाराजश्री ने कहा है कि : स्वयं सेवको की सभा से भी अधिक विशेष यह सच्चे सत्संगी की सभा है। यह हमारे घर की सभा है। यहाँ सभीने अपनी दुकान, व्यवसाय, नौकरी, या अभ्यास का त्याग करके जो समय देकर सभी हरिभक्तों की सेवा की है वह नरनारायणदेव की सेवा रुप ही है। क्योंकि उत्सव देवका है हमारा नहीं। इसीलिए नरनारायणदेव आप लोंगो पर अति प्रसन्न हुए है। जो निर्मानी है वे ही सेवा प्रदान कर सकते है। यही बात भगवानने वचनामृत में कही है। क्योंकि उत्सव में कई प्रकार के लोग आते हैं। आप गाड़ी पार्किंग में रखे हो और कोई गाडी लेकर पार्किंग में गाडी पार्क करे। आप के समझाने पर भी इस स्थान पर गाड़ी मत पार्क किजिए परंतु गाड़ी मालीक मना कर दे। इस प्रकार के उत्तर को सहने की क्षमता निर्मानी सत्संगी हरिभक्त के पास ही हो सकती है। आपसे रसोई घर में लोगो को भोजन करवाने के समय यदि देर होने पर पूडी के स्थान पर लड्डु परोसने पर कोई हरिभक्त को यह स्थिति उचित नहीं लगने पर धमकी देने लगते है कि अभी मैं संतो को फोन लगाकर बता दूं कि रसोईघर में उचित व्यवस्था के साथ कार्य नही होता है। यह सब कुछ निर्मानी हरिभक्तों को कहना पड़ता है। हमारे उत्सव एक से एक धूमधाम

पूर्वक मनाये गये है। कई लोगो के शुभेच्छापूर्ण फोन आते भी है। उत्सव बिना किसी प्रकार की क्षति या आपत्ति के साथ पूर्ण होना इस बात को फलित करता है कि नरनारायणदेव हमारे साथ है।

प्रथम दिन ही पू. बड़े महाराजश्रीने निर्गुणदासजी स्वामी की बातो में से ३४३ नंबर की बात सभा में पढकर सुनाई। यह बात कोई दंतकथा नहीं है अपितु सत्य इतिहास है । गादी के विभाजन के पश्चात अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री को बड़ी उलझन थी कि गादी के विभाजन के कारण व्यवहार चलाने में असंभव हो रहा था। उस समय पाकिस्तान के करांची मंदिर के अलावा और कोई बड़ी आवक का मार्ग नहीं था। अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री रात्रि के समय महाराज के दर्शन करने हेतु अक्षर ओरडी में पधारे। महाराजने पूछा, इस समय क्यों आना हुआ ? दादा ने कहा, मेरी एक समस्या है, महाराजने कहा, क्या। दादाने कहा, ''हमारे नरनारायणदेव के साधु, ब्रह्मचारी तथा सत्संगी बहुत कम संख्या में है। तो व्यवहार किस प्रकार चलेगा ? श्रीजी महाराजने कहा, आपके पक्ष में मैं हूँ। मै आपकी सहायता करुँगा। आपके देश की वृद्धि अवश्य होगी । आप चिंता न करे, इस प्रकार सांत्वना देकर महाराजने खड़े होकर दादा को भेट लिया। कंधे पर हाथ रखकर वचन दिया कि जिस पक्ष में मैं हूँ उस पक्ष में किसी प्रकार का दुःख नही आ सकता। मेरा दृढ निश्चय रखना। मैं सदैव आपके समीप हूँ । आपके सभी व्यवहार में मार्गदर्शन करुंगा। उत्सव के माध्यम से हमे इस बात की अनुभूति हो रही है । हम भी नरनारायदेव पर सब कुछ छोडकर संतो के साथ मिलकर हँसी खुशी से रहते हैं। एक भाईने बड़े महाराजश्री से शिकायत की थी प.पू. महाराजश्री सदैव हँसते रहते हैं। पू. बड़े महाराजश्री उसे देखते ही रह गये । भगवान जैसे भगवान प्राप्त होने के पश्चात् दुःखी रहने का कोई अर्थ ही नहीं है।

श्री नरनारायणदेव के प्रताप से अहमदाबाद के मंदिरो तथा सत्संग का पलड़ा सदैव भारपूर्ण ही रहेगा। श्री नरनारायणदेव की इच्छा अनुसार सत्संग घटे या बढ़े वह देव की ही इच्छा है। हमें सेवा में समर्पित रहना चाहिए। निष्ठापूर्वक सेवा करनी चाहिए। इसीलिए धनका यथार्थ उपयोग किया गया है। नहीं तो वह धन केवल प्रशंसा में ही रह पाता बिना उपयोग किये ही। आपको धन्यवाद करने का फल अवरोधका कारण बन सकता है । इसीलिए अटकना नही है, थोडा आराम कर लिजिए, फ्रेश हो जाइये । राम स्वामी को कहकर एकाद पिकनिक का आयोजन कर लीजिए। सभी लोग साथ मिलकर घूमो, फिरो, और उत्सव का स्मरण कीजिए । उसके पश्चात दूसरा निमित्त लेकर पुनः बड़ा उत्सव मनाया जाय। कई लोग ग्रह, नक्षत्र, पितृ आदि के दोष की बाते करते है। पितृ जब जीवीत होते है तब वे घर के सभ्यो के लिए दोष या अवरोधपूर्ण नहीं होते। मरजाने के बाद ऊपर से नीचे आकर अवरोधरुप हो जाते है । हमें नरनारायणदेव - स्वामिनारायण भगवान मिले है। दृढ निश्चय करना है हमे। इसीलिए हम धनुर्मास में भी मूर्ति प्रतिष्ठा करते हैं। जिस में निश्चय निष्ठा का अभाव होता है उसके लिये सबकुछ अवरोधसमान है, अंत में स्वयं में विश्वास का अभाव ही अवरोधसमान है।

दुनिया के कोने-कोने में तथा गाँव गाँव में महाराजश्री की बात और नाम पहुँचाना है । मंदिर बनवाना है। गादीवालाश्री के मार्गदर्शन में आज बहने भी जागरुक है। गाँव-गाँव में सत्सग मंडल चलाती है। बहने मान की आकाक्षां के बिना कार्य करती है। बहने सत्संगी होती है तो पति को भी मंदिर तक ले आती है। पुरुष मन से या बिना मन से मंदि रमें आते है तो सत्संग की वृद्धि होती है। क्योंकि देव की अलौकिक दृष्टि उन पर पड़ती है। ऐसे सत्संग-उत्सव में आने पर भिन्न भिन्न स्वादिष्ट मिष्टान्न-भोजन कहाँ खाने को मिलेगें । हमें रसोई में देखकर सोचना पड़ा की ऐसा रसथाल ग्रहण करके उसे पचाने के

लिए तो कसरत करनी पडेगी । लेकिन कभी-कभी खाने में कोई आपत्ती नही है । परंतु ऐसा भारी भोजन रोज नही ग्रहण करना चाहिए । शरीर स्वस्थ होगी तो भजन में सुख अवश्य आयेगा । हम तो तला हुआ कभी नही खाते । प्रातः नास्ते में भी चिवड़ा तथा मूग खाते है ।

आप सभी देव के प्रति निष्ठावान बनिए । देव के लिए काम कर रहे है इसीलिए आप सभी हमारे हैं । आपके मुख पर नरनारयणदेव का ही तेज है । गाँव में खेती करने वाले मजदूर के मुख पर भी जो तेज दिखाई पड़ता है वह तेज कहाँ से आता है । देव का आश्रय तथा निष्ठा रखने से मुख पर तेज आता है । यदि गाँव में एक भी सत्संगी है तो हमने यह देखा है कि यदि गाँव में नरनारायणदेव की जमीन का हिस्सा यदि गलत लोगो के हाथो में आ जाये तो वह सत्संगी अपना धन-समय लगाकर भी उस जमीन को हांसिल कर लेता है । कितनी हिंमत का कार्य है ये । मंदिर, सत्संग तथा देव को जो अपना मानते है वे ही यह कार्य कर सकते है । यदि अपने घर में कोई छोटी सी भी त्रुटि हो तो घरवाले तुरंत उसे सही करवा देते है परंतु जो देव की सेवा करते है वे अधिक भाग्यशाली है ।

परिवार दिन पर प.पू. महाराजश्रीने कहा कि, आप विश्व को एक करने की बाते करते हैं परंतु उसकी शुरुआत हमें हमारे परिवार से ही करनी होगी । पू. महाराजश्रीने बुझउल के एक खेल का दृष्टांत दिया । घर में जब मा-बाप या भाई-बहन वोटस अप या टेलिफोन पर बात कर लेतें हैं तो साथ बैठकर बात करने का टाईम ही नही मिलता । इस कारण पारिवारिक सुख नही मिलता । सुख दुःख में परिवार के सहयोग निभाते है । बैकों में लाखो-करोडो रुपये पड़े हो ऐसी स्थिति में यदि कोई कष्ट हो तो वह धन आंखो का आंसू नही पोंछता । उसी प्रकार हृदय में जब किसी बात की पीड़ा हो तो हृदय खोलके भी ए.सी. की दवा लेने पर भी कष्ट कम नही होता । कुटुंब - परिवार में यदि एकता होगी तो ही पारिवारिक सहयोग मिल पायेगा ।

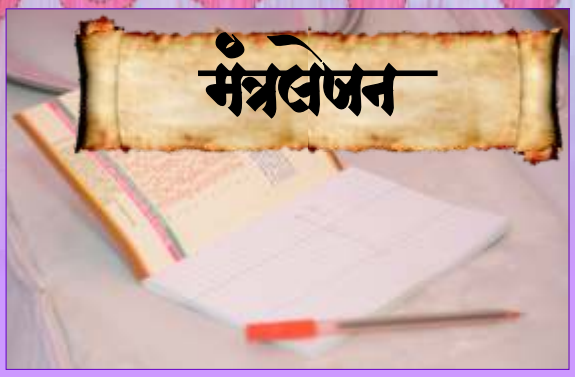
मंत्रभोजन

वक्ताश्रीओ
शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी
(गांधीनगर)
शा. स्वामी कृष्णस्वरुपदासजी
(भुज)
शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी
(जेतलपुर)
शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी
(वडनगर)
सभा संचालकश्री
शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी
(कालुपुर)
शा. स्वामी रामकृष्णदासजी
(कोटेश्वर)

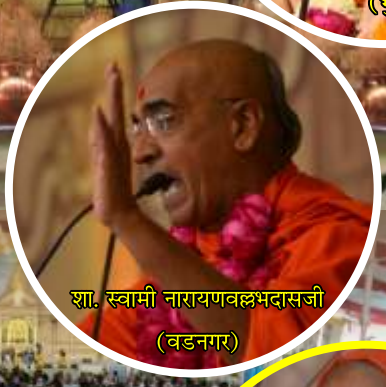

मेडिकलकेम्प

श्रीनरनारायणदेव महोत्सव प्रयोजन तथा फलश्रुति

– शा. हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी अमदावाद मंदिर)

स्वामिनारायण संप्रदाय उत्सव का संप्रदाय है । स्वामिनारायण भगवान अमदावाद, वडताल, गढडा, जेतलपुर, मूली, भुज, मांगरोल, कारियाणी, पंचाला इत्यादि स्थानो पर उत्सव, कृष्म जन्माष्टमी, वसन्तोत्सव, एकादशी, प्रतिष्ठोत्सव, रामनवमी, विष्णुयाग इत्यादि उत्सवों के माध्यम से सभी को आन्दित करते थे । इसी बहाने बहुत सारे सत्संगी भक्तजन एकत्रित होते और आत्मीय भाव बढता । श्रीहरि अपने त्यागी सन्त-गृहस्थ सभी को अलौकिक सुख प्रदान करते । पृथ्वी के ऊपर ही उन्होंने अक्षरधाम कर दिया था । भक्तजन आपस में मिलकर आनंद का अनुभव करते । श्रीहरि की महिमा का गुणगान करते । श्रीहरि को उत्सव बहुत प्रिय था । उत्सवों के माध्यम से एक ही साथ हजारों जीवात्माओं का कल्याण होता है । श्रीहरिने वचनामृत में भी कहा है कि भगवानने जिन-जिन स्थानों पर लीला की है उसका स्मरण रखना चाहिये । वह इस लिये कि शरीर धूटते समय जीव को उन-धुन लीला स्थलों का या प्रभु का स्मरण हो जाय या साधु संत-ब्रह्मचारी का ख्याल (स्मरण) हो जाये तो जीव का कल्याण हो जाय । इसके लिये हम बड़े बड़े विष्णुयाग करते हैं । जन्माष्टमी, एकादशी इत्यादि को भी हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं । इसमें सन्त-ब्रह्मचारी-हरिभक्तों को एकत्रित करते हैं । वह इसलिये कि किसी पापी व्यक्ति को भी इन स्वरुपों का या स्थान का स्मरण हो जाय तो उस जीव का कल्याण हो जाय । भगवान के धाम की प्राप्ति हो जाय ।

महाप्रतापी श्री नरनारायणदेव की कृपा से

अमदावाद देश में अविरत छोटे-बड़े उत्सव होते रहते हैं। श्रीहरि ने जिन उत्सवों की परंपरा दी है उसे श्रीहरि के अपर स्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री को उत्सव बहुत प्रिय होने से अमदावाद देश में द्विशताब्दी उत्सव, रजत-सुवर्ण जयंती महोत्सव, शतामृत महोत्सव, षष्टीपूर्ति महोत्सव, धर्मकुल वंदना महोत्सव, श्री स्वामिनारायण म्युजियम उद्घाटन महोत्सव तथा श्री नरनारायणदेव महोत्सव इस तरह एक से बढकर एक उत्सव होता आया है। श्री नरनारायणदेव महोत्सव आज के समय में समाज के लिये बहुत उपयोगी होते हुये भी अत्यन्त दिव्य तथा अलौकिक था। प.पू. आचार्य महाराजश्री का एक ही लक्ष्य होता है कि उत्सव का निमित्त कुछ भी हो परंतु उस उत्सव के माध्यम से हम सभी एकत्रित होकर श्रीहरि की भजन भक्ति करते हैं साथ में सामाजिक सेवा भी होती है।

इसके पहले के अंक में भी महोत्सव के प्रयोजन की जानकारी दिये थे फिर भी संक्षेप में और भी जानकारी दे रहे हैं। श्रीनरनारायणदेव का यह मंदिर श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का सर्व प्रथम निर्मित हुआ था। समय बीतते काफी क्षति दिखाई देने लगी थी इसलिये प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से पू. पी.पी. स्वामीने मंदिर के जीर्णोध्धार का कार्य प्रारंभ किया था। बाद में पू. निर्गुणदासजीने तथा पू. नारायण स्वरुपदासजीने यह कार्य चालू ही रखा। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से वर्तमान महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा अमदावाद देश श्री नरनारायणदेव स्कीम कमेटी ने इस जीर्णोध्धार के कार्य को खूब वेग दिया। यथार्थ रुप में देश-विदेश के सभी हरिभक्तों के सहयोग से यह कार्य अत्यंत सरल हो गया और सुवर्ण सिंहासन इत्यादि भी बनवाया गया।

जगत के मनुष्य अपने निवासीय भवन का रिनोवेशन करें या अन्य कोई बड़ा कार्य करें तो अपने अत्मीयजनों को बुलाते हैं और छोटा-बड़ा उत्सव करते हैं। तो अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति भरत खंड के अधिष्ठाता श्री नरनारायणदेव मंदिर का कलाकृतियुक्त जीर्णोध्धार हो इसके लिये बड़ा-उत्सव न करेंतो देव के प्रति अपनी निष्ठा कमजोर कही जायेगी।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अति प्रसन्नता के साथ आज्ञा की है कि जो देव हमें सर्वोपरि मिले हैं उनका उत्सव भी सर्वोपरि किया जाये। प.पू. आचार्य महाराजश्री के मार्गदर्शन में महोत्सव के उपलक्ष्य में धार्मिक तथा सामाजिक कार्यक्रम की रुपरेखा तैयार की गयी थी। भक्तों के सहयोग से मंदिर के जीर्णोद्धार के लिये नूतन सुवर्ण सिंहासन के लिये जो भी दान आये वे सभी सफल हो गये।

महोत्सव के उपलक्ष्य में २५१ गाँवो में सत्संग सभा हुई। १५१ मिनट की २५१ गाँव में स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन हुई। ५१ करोड श्री स्वामिनारायण महामंत्र लेखन कार्य हुआ। जनमगंल का १,२५,००,००० वचनामृत का ५१०० तथा भक्त चिंतामणी का ५१०० पाठ किया गया। कितने मंदिरो से संत-हरिभक्त पदयात्रा करके कालुपुर श्री नरनारायणदेव का दर्शन किये। पदयात्रा में संत-हरिभक्तों को उत्साहित करने के लिये स्वयं प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री लगे थे। जैसा आचरण वैसा उपदेश के विषय में धर्मकुलने चरितार्थ किया है। किसी के विना जानकारी की महोत्सव के समय प.पू. लालजी महाराजश्री ब्लड डोनेशन किये। २१०० से अधिक बोतल में ब्लड डोनेशन हुआ। महोत्सव के समय सर्वरोग निदान केम्प लगाया गया था। राहत दर में चश्मा कान के बहरापन को दूर करने की मशीन का वितरण किया गया। गाँवो के ११००० जितने बालकों को शैक्षणिक साधन दिये गये। १५१ अपंगो को ट्राईसिकल वितरण किया गया। व्यसन मुक्ति अभियान

से तथा प्रदर्शन से हजारो लोग व्यसनमुक्त हुये।

महोत्सव के के समय श्रीमद् सत्संगीभूषण अन्तर्गत श्री नरनारायणदेव माहात्म्य कथा की गयी थी। एक दिवसीय श्रीहरि की महापूजा हुई थी। श्री नरनारायणदेव की नगर यात्रा धूमधाम से निकाली गयी थी। देवों का महाभिषेक, अन्नकूट का भोग लगाया गया था। इस अन्नकूट का प्रसाद गुजरात के अनाथाश्रमो में तथा शारीरिक तथा मानसिक विकलांगो को दिया गया। महोत्सव के समय श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन की गयी। जिस में श्रीहरि, श्री नरनारायणदेव तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजके परम्परा की डोक्युमेनट्री फिल्म, व्यसन मुक्ति, श्री स्वामिनारायण म्युजियम की एक झलक, जीवन में वनस्पति जन्य आयुर्वेदिक औषधियों की उपयोगिता, पर्यावरण इत्यादि के विषय में चित्रो में दिखाया गया था। ११००० दीपकों से कालुपुर मंदिर में समूह आरती की गयी थी। श्री नरनारायणदेव बाल मंडल तथा बालिका मंडल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया था। बाह्मण बालकों का समूह यज्ञोपवीत संस्कार किया गया था। रात्रि के सांस्कृतिक कार्यो में कीर्तन-भजन, नृत्य-नाटिका इत्यादि का आयोजन किया गया था। कथा के साथ ही प्रथम दिन आरोग्य सत्र, दूसरे दिन पर्यावरण सत्र, तीसरे दिन महिला सत्र, चतुर्थ दिन परिवार सत्र का आयोजन किया गया था। जिस में सभी विषयों के निष्णात महानुभावो को आमंत्रण दिया गया था। वर्तमान काल में पर्यावरण तथा परिवार में भावना का ह्रास हो रहा है। उसके लिये चर्चा सत्र का आयोजन किया गया था।

सुंदर कुदरती वातावरण तैयार किया गया था। सभी स्थानों पर सुंदर सुभाषित लिखे गये थे। जीवन में गायका महत्व तथा गाय के दूधका महत्व, पंचगव्य का महत्व, माता-पिता की सेवा, परिवार भावना, परिवार में एकता, व्यसन मुक्ति इत्यादि विषयों पर जन समाज में जागृति आवे इस हेतु से तद्तद्रुप प्रदर्शित किये गये थे।

बहनो के विभाग में बहनो की गुरु प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा अ.सौ. गादीवालाजी, तथा प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा अ.सौ. बडी गादीवालाजी तथा पू. श्रीराजा एवं समग्र धर्मकुल की उपस्थिति में सत्संगी बहनो द्वारा विविधकार्यक्रम किये गये थे। विद्वान संतो के मुख से व्याख्यान भी किये गये थे। श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप के मुख से सभाजन को आशीर्वाद प्राप्त हुआ था . स्वयं सेवको की सेवा सराहनीय थी। यजमान परिवार तथा अन्य धर्मप्रेमी लोग तन, मन, धन से सेवा करके, लाखो लोग महोत्सव का दर्शन करके, कथा सुनकर, भोजन-प्रसाद लेकर अपने जीवन को धन्य बना दिये है। अंतकाल में ऐसे महोत्सव के माध्यम से श्रीहरि की मूर्ति का स्मरण हो जाय तो जीवात्मा कितना भी बड़ा पापी हो वह परम पद को प्राप्त करलेगा।

स्वामिनारायण महामंत्र, जनमंगल नामवलि या स्तोत्र पाठ, यज्ञ, महापूजा, अभिषेक, अन्नकूट, भक्त चिंतामणी या वचनामृत पाठ, पदयात्रा द्वारा देव दर्शन इत्यादि का महत्व जब शास्त्र का वांचन करें तभी समझ में आयेगा। लेकिन यहाँ पर प्रत्यक्ष दर्शन से वह सभी अपने आप हृदयंगम हो गया। महाराजने अपनी बांहो में भरकर श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया, इनमें (श्री नरनारायणदेव में) तथा श्रीजी महाराजमें अणुमात्र भी अन्तर नहीं है। ऐसे वाक्य हम सदा वांचते रहते हैं। सुनते रहते हैं। आज इस कार्यक्रम से महोत्सव के प्रयोजन की फलश्रुति सर्वत्र दिखाई दे रही है।

इस महोत्सव में सभी प्रकार की सेवा करने वाले तथा पूज्य संत एवं छोटे-बड़े हरिभक्त सभी का आभार मानकर पुनः ऐसे महोत्सव को करने के लिये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञाप्राप्त करके इससे भी अच्छा करने की आज्ञा प्राप्त करके अपने जीवन का आत्यंतिक कल्याण करने के लिये श्रीहरि की प्रसन्नता प्राप्त करलेनी चाहिये।

प्रदर्शन

श्री स्वामिनारायण

अक्षरध्वनि

श्री स्वामिनारायण
मासपुष्प
फरवरी-मार्च - २०१५ ० २५

पर्यावरण दिन

सेवा

शिल्पी आनंदानंद स्वामी

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

राजस्थान के भरतपुर स्टेट में ऐतिहासिक अत्यंत पराक्रमी राजा हो गये । उत्तम छत्रीय राजपूत जाटवर्ग के राजाओ ने राज्य किया । इन्टरनेट के माध्यम से गूगल के माध्यम से यहज्ञात हुआ कि आनंदानंद स्वमी के पूर्वजों का इतिहास बड़ी वारीकी के साथ रखा गया है । सत्तरहवीं सदी के उत्तरार्ध में महाराजा सूरजमलजी पिता बदनसिंहजी राज्य करते थे । वे शूरवीर साहसी तथा व्यवहार कुशल पवित्र राजा के रुप में जानेजाते थे । उन्होंने दिल्ली के राजाओं के साथ कईबार लडाई करके विजयप्राप्त की थी । महाराजा सूरजमल को पांच रानियां थी, जिन से पांच पुत्र हुये थे । उसमें से कावरिया देवी नामकी रानी के कोंख से वि.स. १८१३ आश्विन शुक्ल दशहरा को एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम नवलसिंह रखा गया । आगे चलकर इस संप्रदाय में आनंदानंद स्वामी के नाम से जाने गये । एकबार महाराजा सूरजमलजी को दिल्ली के नवाब के साथ युद्ध में दुश्मनों ने कपट से मार डाला । साथ में जवाहरसिंह बडे पुत्र का भी अवसान हो गया । ऐसी विकट परिस्थिति में उत्तराधिकारी का अधिकार रतनसिहंजी के पुत्र किशोरसिंहजी को २ वर्ष की छोटी उम्र में राजगद्दीपर बैठा दिया गया । उस समय की परिस्थिति का ख्याल करके सोलह वर्ष की उम्र वाले नवलसिंहजी ने प्रतिनिधिराजा के रुप में राज्य के सम्पूर्ण उत्तर दायित्व को सम्हाल लिया । उसी समय दो वर्ष की उम्र वाले राज्याभिषिक्त केशोरीसिहंजी की विमारी के कारण मृत्यु हो गयी । इसलिये नवलसिंहजी को राज्य पद पर विराजमान कर दिया गया । सात वर्ष के स्वल्य समय में महाराजा नवलसिंहजीने अनेक राजाओ को जीत लिया । अनेक सत्कर्म किये । शूवीरता तथा आध्यात्मिकता के समन्वय से प्रजा के दिल को भी जीत लिये । जन्म से वैराग्य होने के कारण जगत का मोह उन्हें बांधनही सका । मात्र वे कर्तव्य परायण रहकर अपने ध्येय को सिद्ध करते रहे । जिस में भरतपुर के बलराम मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, विहारीलालजी मंदिर, आग्रा में भव्य हंस महल जवाहरसिंहजी के स्मरण में पुष्कर तीर्थ में जवाहरघाट बनवाये । वृंदावन गोवर्धन में मानसगंगा मंदिर तथा राजमहल बनवाये । परिक्रमा में विश्राम स्थल तथा अन्य जीर्णोद्धार का कार्य करवाये । तीर्थ स्थानो में अन्नक्षेत्र चलवाये । अनेकों यज्ञ करवाये । नवलसिंहजी की पत्नी का नाम मृगनैनी था । उनसे कोई सन्तान नहीं हुई ।

अपने पराक्रम से भरतपुर की राज्यतिजोरी धनसंपत्ति से छलकने लगी थी । वे धन का उपयोग मौज सौख के लिये नहीं अपितु सत्कर्म में करते थे । वे एकमात्र सूरजमल के परिवार का आधार स्तम्भ बने । उनकी कीर्ति चक्रवर्ती राजाओं की तरह चारो तरफ फैलने लगी थी । उस समय महाराजा नवलसिंहजी की उम्र २३ वर्ष की थी । परंतु उनका जीवन प्रभु की सेवा के निमित्त था इस लिये राज्यगद्दी को स्वेच्छा से अपने छोटे भाई रणजीतसिंहजी को सौंपकर

पूरेपरिवार से प्रार्थना पूर्वक स्वीकृति प्राप्त करके प्रभु भक्ति करने के लिये अपनी प्रिय भूमि वृन्दावन में आये । वहाँ पर परिक्रमा, कीर्तन भक्ति, तीर्थवासियों की सेवा करते हुये दो वर्ष विताये । कुछ मुमुक्षुओं से अयोध्या के लोमश ऋषि के आश्रम में रहने वाले महात्मा रामगलोलादासजी की साधुता को सुनकर वृन्दावन से आयोध्या आ गये । रामगलोलाजी उन्हे उत्तम वैरागी समझकर शिष्य बनाये । व्यवहार कुशलता तथा साधुता का समन्वय देखकर उन्हे साधु की दीक्षा देकर लक्ष्मणदास नाम रख दिया । कुछ समय वीतने के बाद लक्ष्मणदासजी की इच्छा न होते हुये भी गुरु की आज्ञा मानकर गुरु के उत्तराधिकारी हुये । इसके बाद राम गलोलाजी साकेतवासी हो गये । ५०० वैरागी तथा हजारो गाँव के शिष्य समुदाय के दिल को लक्ष्मणदासजीने जीत लिया । निशान डंका, हाथी, घोडा, धन, चामर, गद्दी इत्यादि वारसा में मिला । लेकिन इन सभी को बन्धन करता समझकर मन प्रभु की भक्ति में ही रहता था ।

अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति परब्रह्म परमात्मा घनश्याम महाराज जब बाल्यावस्था में अवधपुर में रहते थे उस समय रामगलोला आश्रम में राम कथा तथा रामधून सुनने के लिये जाते थे । इसके साथ ही उनकी मुलाकात लक्ष्मणदासजी के साथ सरजू गंगा के किनारे होती थी । महाराजने लक्ष्मणदासजी में माया का आवरण रखकर उनके ज्ञान को भुला दिया था ।

प्रसंग ऐसा बना कि लक्ष्मणदासजी भगवान की पूजा कर रहे थे उसी सयम मंदिर में द्वारका की यात्रा करके आये हुये वैरागी आपस में बात कर रहे थे कि पश्चिम भारत में जीवन मुक्त मार्ग के गुरु रामानंद स्वामी तथा उनके शिष्यों का वैराग्य तो अत्यंत प्रसंशनीय है । सारे जगत से न्यारा त्यागपूर्ण जीवनमुक्त मार्ग है जिस में भगवान कृष्ण का साक्षात् दर्शन कराया जाता है, गोलोक-वैकुंठका दर्शन कराया जाता है । यह वात आपस में सभी कर ही रहे थे कि रामलक्षमण जानकी की मूर्ति से अपार तेज निकलने लगा । लक्ष्मणदासजी को हुआ कि जीवन मुक्तों की वात का श्रवण करने मात्र से मूर्तियो में इतना तेज निकल सकता है तो जीवन मुक्त कैसे होंगे । बाहर आकर वैरागियो से जीवनमुक्तों की वात जानकर दर्शन करने की उत्कंठा हुई । उस समय जीवनमुक्तमार्ग रामानंद स्वामी के उद्धव संप्रदाय को समझा जाता था ।

एकवार लक्ष्मणदासजी अपने शिष्यों से द्वारका की यात्रा करने की बात की कितने वैरागी आनाकानी करने लगे । इसका कारण यह था कि उस समय राम के उपासक कृष्ण की तीर्थयात्रा करना उचित नहीं मानते थे । युक्ति प्रयुक्ति से अपने शिष्यों को समझाकर ५०० जितने शिष्यों को साथ लेकर निशान डंका, हाथी, छत्र-चामर लेकर रामगलोला का संघ अयोध्या से द्वारिका के लिये प्रयाण किया ।

कितने दिनो तक चलने के बाद द्वारिका की यात्रा के मार्ग में जीवन मुक्तों को मिलने के आशय से लोजगाँव में लक्ष्मणदासजी के ५०० वैरागियों का समुदाय पहुंच गया ।

लोज गाँव में स.गु. रामानंद स्वामी के दर्शन होते ही उनमें राम लक्ष्मणजानकीी का दर्शन होने लगा । अब वे अपने छत्र-चामरादि साधनो का त्याग कर स्वामीके सामने बैठ गये । नित्य नूतन दिव्य अनुभवों का खजाना मिलता रहता, द्वारिका जाना ही भूल गये । १५ दिन बीत जाने के बाद वैरागी जाने की जल्दी करने लगे । इसके बाद लक्ष्मणदासजी ने कहा कि "हमारे लिये तो यही द्वारका" आप लोगों को जाना हो तो जाइये । अन्य वैरागी द्वारिका की तीर्थ यात्रा करके वापस लौटे तो लक्ष्मणदासजीने अपने उनशिष्यो मे से योग्य शिष्य को अपना उत्तराधिकारी बनाकर अयोध्या वापस भेंज दिये । स्वयं को जो चाहिये था वह उन्हें प्राप्त हो गया । अब वे रामानंद स्वामीके शिष्य होकर वहीं रहने लगे । स्वामीने उन्हें भागवती दीक्षा देकर आनंदानंद स्वामी नाम रख दिया । गुरु रामानंद स्वामी तथा रामदास स्वामी, मुक्तानंद स्वामी इत्यादि बडे संतो के साथ रहकर सेवा में लग गये । संवत १८५५ की यह वात है ।

संवत १८५६ में नीलकंठवर्णी लोज में पधारे तब आनंदानंद स्वामी रामानंद स्वामी के साथ भुज गये हुये थे । परछायी की तरह रामानंद स्वामी के साथ रहते थे । पूर्वाश्रम में महाराज के पद पर रहकर त्यागाश्रममें गादीपति के पद पर रहकर सेवा करना सामान्य मनुष्य का काम नहीं है जो मुक्तधाम का मुक्त हो वही यह कर सकता है.

रामानंद स्वामी ने नीलकंठ वर्णी को छोटी उम्र में गादी सौंपी यह देखकर अन्य शिष्यों में असंतोष था । उस समय रघुनाथ जैसे असुरो को छोडकर अन्य को समझाने में

आनंदानंद स्वामी को पूर्ण योगदान था । भक्तिभाव तथा व्यवहार कुशळता स्वामी में जन्मजात थी ।

रामदास स्वामी तथा मुक्तानंद स्वामी की तरह रामानंद स्वामी तथा नीलकंठ वर्णी की अनुवृत्ति में रहकर श्रीहरि के वचन के अनुरागी थे।

श्रीहरिने मांगरोल में समाधिप्रकरण चलाये उसके पहले ही आनंदानंद स्वामी को वर्णी में सर्वोपरि भगवानपना का निश्चय होगया था । श्रीहरि विशेष रुप से व्यवहार के सभी कार्य स्वामी की सलाह लेकर करते थे । पूर्व के गादीपति वैरागी के सत्संग में आने से अन्य वैरागी सन्यासी भी आश्रित होने लगे । ऐसे आगन्तुक साधुओं के नियमन का उत्तरदायित्व आनन्दानंद स्वामी को दिया गया ।

आनंदानंद स्वामी के अनेकों प्रसंग है । जब अहमदाबाद में अंग्रेज सरकार ने मंदिर करने के लिये जमीन दी तो सभा में श्रीहरिने कहा कि यहाँ के मंदिर का निर्माण कार्य का भार कौन लेगा । यह सुनकर कोई कुछ नही बोला । तब श्रीजी महाराजने आनंदानंद स्वामी को बुलाकर कहा कि स्वामी आप राजवंश में जब थे तब अनेको मंदिर बनावाये है अत: आप अनुभवी है यह कार्य आपको सौंपते हैं । कुशलता के गुणों को देखकर महाराजने तुमडी में से ५/- रुपये देकर मंदिर निर्माण करने के लिये भेंजे । स्वामी शिष्य मंडल के साथ लेकर अहमदाबाद आये । श्रीहरि की पूर्ण कृपा हो तथा काम करने की खूब सूझ-बूझ हो उसमें भी श्रीहरि को प्रसन्न करने का हेतु हो तो निश्चित ही वह संकल्प पूर्ण होगा । संप्रदाय का प्रथम मंदिर बन रहा हो, पश्चिम भारत का मुख्य शहर हो, जहाँ पर अनेक मतावलम्बियों का अखाडा हो ऐसे चतुष्कोणीय संकट में मंदिर का निर्माण बड़ा कठिन था । आनंद स्वामी बड़े कुशल थे अपनी कुशलता के कारण ही मंदिर निर्माण कराने में सफल हो गये ।

स्वामी के दाहिने हाथ में कमल का चिन्ह था । मतलब लक्ष्मी का सदावास । लक्ष्मीबंदन करता है इस लिये उन्हें अपने पास आने नहीं देते थे ।

स्वभाव से बड़े दयालु थे । कडक भी उतने थे । उदार होते हुये भी सूक्ष्मता से काम करते थे । बिनयी होते हुये भी शत्रुयों को कंपाने वाले थे । परंतु जीतुबा के लिये प्रेमरुपी साधन का उपयोग करते थे ।

संप्रदाय के सर्व प्रथम मंदिर के निर्माता, जेतलपुर मंदिर के निर्माता, भरुच मंदिर के निर्माता तथा २७ जितने हरि मंदिरो के निर्माता आनंदानंद स्वामी के जीवन के अनेकों प्रसंग शास्त्रो में काव्यग्रन्थो में मिलता है । यह सब भविष्य में अपने लेख में लिखूंगा । स्वामी का अक्षरवास जेतलपुर में संवत १९१७ आश्विन कृष्ण एकादशी को हुआ था । उस समय स्वामी की उम्र १०३ वर्ष की थी ।

पार्थिव देह का अग्नि संस्कार जेतलपुर देव सरोवर के किनारे अक्षरफूलवाडी में किया गया था । जहां पर आज भव्य स्मृति स्थान बनाया गया है ।

अमदावाद श्री नरनारयणदेव के मंदिर का निर्माण कार्य निर्विघ्न पूर्ण होते ही सम्प्रदाय का डंका दिगंत तक बजने लगा । विधर्मियो की नीति करमा गयी । सहजानंद स्वामी की जय जयकार होने लगी । इसका यश आनंदानंद स्वामी को मिला । इसके अलांवा नवमंदिरो के निर्माण का कार्य आनंदानंद स्वामी ने करवाया था । सर्जन का काम हो या उत्सव का काम हो, बाद विवाद हो सब में आनंदानंद स्वामी की जरुरत पडती थी.

स्वामी ने अन्तिम के जीवन ३० वर्ष तक जेतलपुर में सेवा करते हुये बिताये । इसके अलांवा जेतलपुर के अगल बगल के गाँवों में भी हरिमंदिरो का निर्माण कार्य करवाया । उपरोक्त सभी वातें अनेको शास्त्रों में उल्लिखित मिलती है ।

महिला दिन

महिला दिन

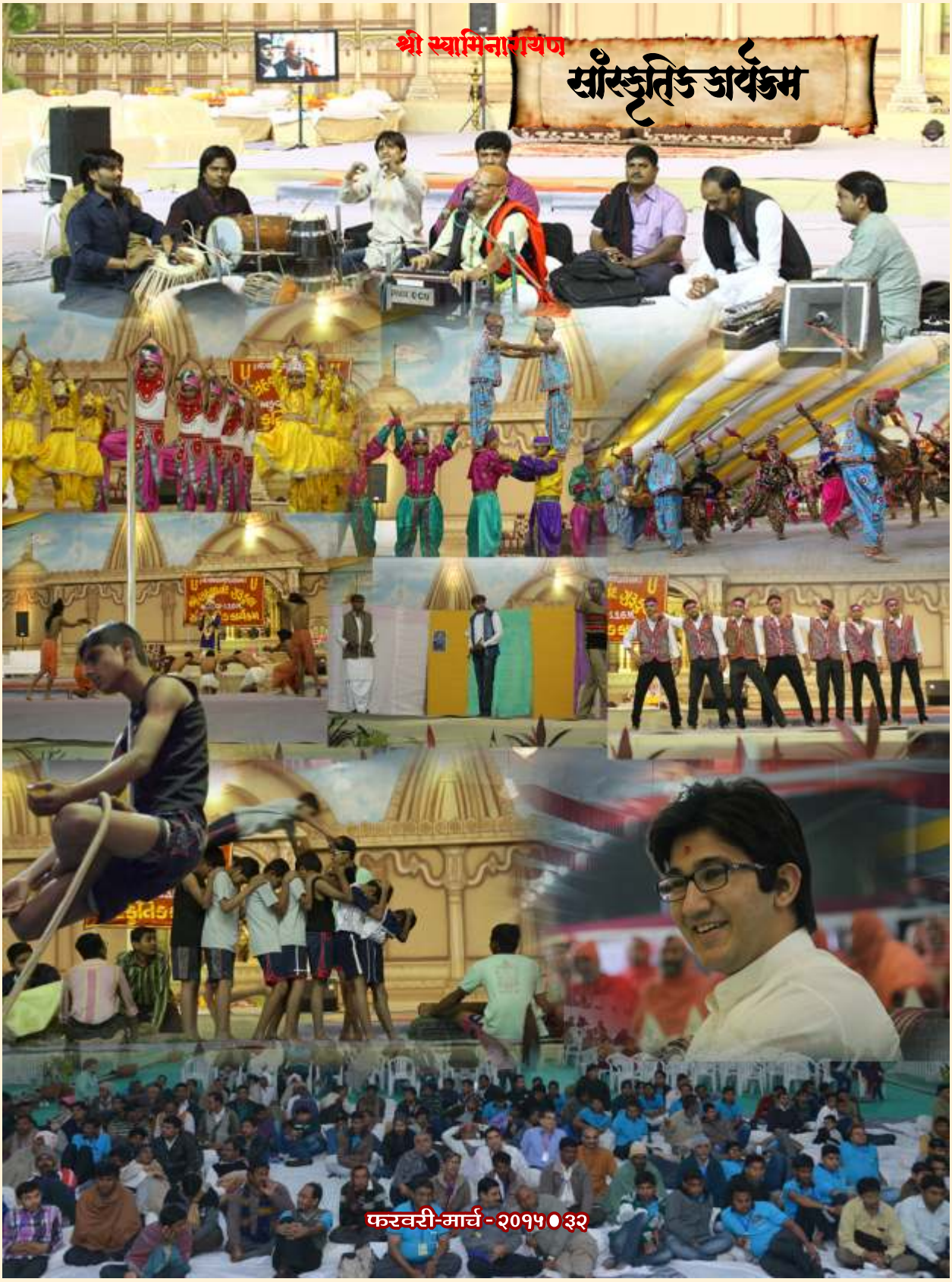
श्री स्वामिनारायण
सांस्कृतिक कार्यक्रम

सांस्कृतिक कार्यक्रम

केमेरा कोर्नर

सदा प्रगट श्री नरनारायणदेव

- शास्त्री हरिकेशवदास

स्वामिनारायण भगवान कहते हैं कि ''अमे आमारुं रुपजानी ने लाखो रुपियानुं खरच करीने शिखरबद्ध मंदिर श्री अमदावादमां करावीने श्री नरनारायणदेवनी मूर्तियुं प्रथम पधरावी छे। अने ए श्री नरनारायण तो अनंत ब्रह्मांडना राजा छे।'' (जे. ५)

श्री पुरुषोत्तम ते जे ते आज तमने सर्वेने श्री नरनारायण रुषि रुपे थईने प्रगट मल्या छे । माटे नि:संशय थईने आनंदमां भजन करजो ।(जे. ४)

इष्टदेव श्रीहरि के स्वमुख से निर्गत उपरोक्त वचन वांचकर अपने हृदय में निश्चय होना चाहिये । अमदावाद में विराजमान श्री नरनारायणदेव सदा प्रत्यक्ष दर्शन देते है । सभी आश्रितों के सभी प्रकार के मनोरथ को पूर्ण करते हैं ।

सौ वर्ष पहले की एक घटना है । किसी मुमुक्षु को अपनी वृद्धावस्था में विचार आया कि शास्त्र तथा संत कहते है कि विधि के साथ प्रतिष्ठित प्रतिमा में भगवान साक्षात् विराजमान रहते हैं । ऐसा विचार कर लाखों की

संपत्ति साथ लेकर यात्रा करने के लिये निकल पडता है और निश्चय करता है कि जहाँ पर प्रभु सामने से आकर संपत्ति को मांगेगे, उन्हीं को सम्पूर्ण संपत्ति देकर (अर्पण करके) उसी देवता के आश्रित हो जायेंगे । कितने तीर्थो में अपनी संपत्ति लेकर भटकता रहा लेकिन उसकी इच्छा पूर्ण नहीं हुई ।

जब वह गुजरात में घूमते हुये अमदावाद आया तो सुना कि श्री स्वामिनारायण मंदिर बहुत महिमावाला है, जिसमें श्री नरनारायणदेव विराजमान है और बड़े प्रतापी हैं । वह मुमुक्षु अपने मंदिर में आया, उस समय राजभोग की आरती हो चुकी थी । अपनी संपत्ति का पोटला बगल में रखकर श्री नरनारायणदेव के चौखट पर मस्तक रखकर वंदन किया तो श्री नरनारायणदेव मंदिर के मध्य से आवाज दिये कि अब कहाँ तक संपत्ति को लेकर ढोते रहोगे, इसे यहीं रख दो ।

अमृत के समान आवाज सुनते ही अगल बगल देखे तो वहाँ कोई नहीं था । पुनः वही आवाज सुनाई दी । भगवान की तरफ देखा तो उसे आभास हुआ कि मूर्ति में से आवाज आयी । उस भक्त के हृदय में अहो ! अहो ! का भाव प्रगट हो गया । सभी संपत्ति श्री नरनारायणदेव के चरण में समर्पित करके श्रीहरि का परम आश्रित हो गया ।

याद रहे कि श्री नरनारायणदेव सदा प्रगट - प्रत्यक्ष हैं । इसी स्वरुप में श्रीजी महाराज हम सभी को अखंड दर्शन का सुख प्रदान कर रहे हैं । आज भी अपने आश्रितों की प्रार्थना सुनकर उनके सभी संकल्प पूरा करते हैं । श्रीनरनारायणदेव सदा विराजमान है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण यह महामहोत्सव है । इस महामहोत्सव में आकर जो दर्शन का लाभ लिया है, सेवा किया है उन सभी का आत्यंतिक कल्याण होगा । अति भव्य तथा दिव्य इस महोत्सव में जिसने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल परिवार का दर्शन किया है एवं विशाल संत समुदाय के साथ लाखों हरिभक्तों का दर्शन किया है उसके मोक्ष के लिये कोई शंका नहीं है ।

मध्य के ३५ वें वचनामृत के अनुसार यह उत्सव सर्वजन समाज के उत्कर्ष के लिये था । यज्ञ महापूजा, अखंड धुन, अखंड प्रसाद इसके अलांवा गरीबों, रोगियों, विद्यार्थियों के लिये उपयोगी वस्तुओं का वितरण भी किया गया था ।

अर्थात् सर्वजीव हितावह - इस उत्सव का जिसे संस्मरण रहेगा निश्चित ही उसका कल्याण होगा । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा आशीर्वाद से तथा उन्हीं की अखंड उपस्थिति में संपन्न यह उत्सव सभी के लिये अनेक विध कल्याण कारी होगा । इस प्रकार के भव्य आयोजन को सफल बनाने में पू. महंत स्वामीजी तथा सभी कार्यकर्ता शतशत धन्यवाद के पात्र हैं ।

प.पू. लालजी महाराजश्री एवं पू. श्रीराजा वृद्धाश्रम के वृद्धजनो का अभिवादन करते हुए ।

मंदिर सुशोभन

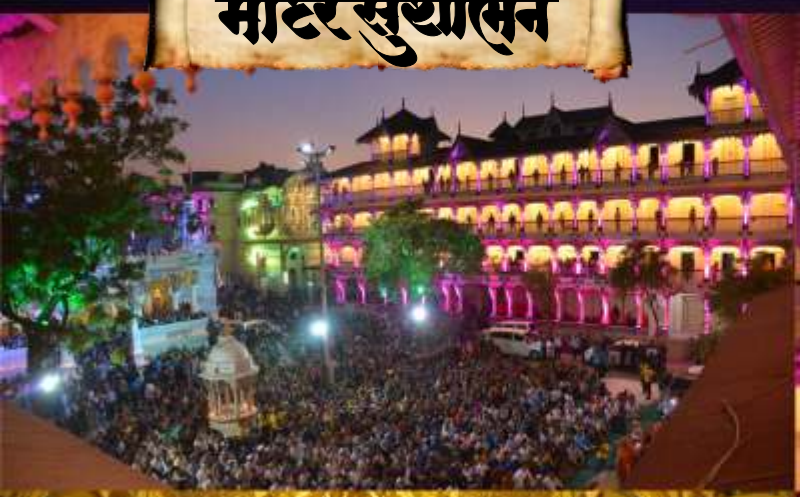

शाकोत्सव

परिवार दिन

यज्ञमंडप

यज्ञमंडप

श्री नरनारायणदेव के सुवर्ण सिंहासन के यजमान
श्री विश्रामभाई लालजी पींडोरिया परिवार

सन्मान

श्री धर्मदेव भक्तिमाता हरिकृष्ण महाराज के सुवर्ण सिंहासन के यजमान
श्री लक्ष्मणभाई राधवाणी - सह परिवार

श्री राधाकृष्णदेव के सुवर्ण सिंहासन के यजमान श्री गांडाभाई तथा विष्णुभाई - सह परिवार

महोत्सव के मुख्य यजमान शेठ श्री नारायणभाई ईश्वरभाई पटेल सह परिवार

कथा के मुख्य यजमानश्री परेशभाई दयालजीभाई पटेल - सह परिवार

शोभायात्रा

शोभायात्रा

विमोचन

उपास्य इष्टदेव की समझ

- शास्त्री निर्गुणदासजी (असारवा गुरुकुल)

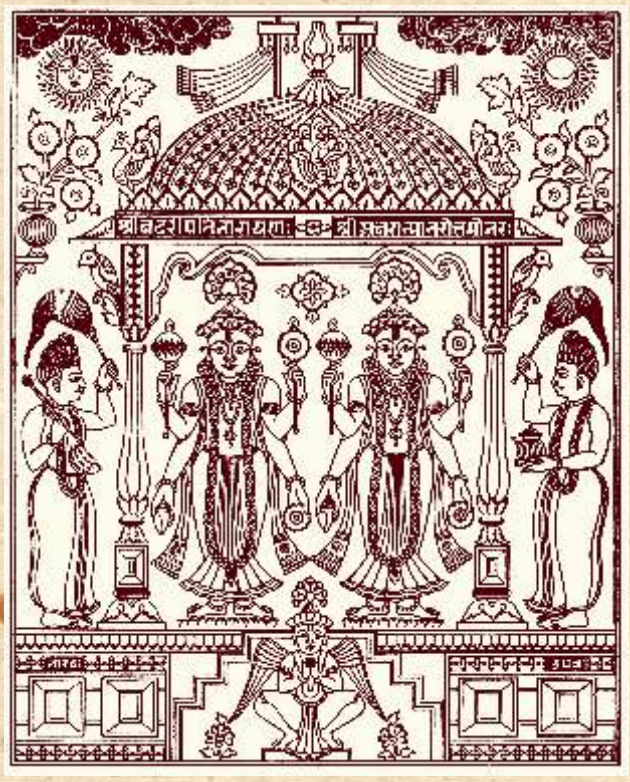

भगवान स्वामिनारायण द्वारा स्थापित श्री उद्धव संप्रदाय की अखंडित परंपरा में धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री से भागवती वैष्णवी दीक्षा प्राप्त करके त्याग-वैराग्य संपन्न सतं समुदाय आज समग्र विश्व में श्री स्वामिनारायण भगवान का अपना स्वरुप ऋषि रुप धारण करके श्रीनरनारायणदेव की अपार अद्‌भुत महिमा का गान करके करोडो मुमुक्षुजीवात्मा को एकान्तिक भक्त बनाकर आत्यंतिक मोक्ष के मार्ग पर प्रयाण करा रहे हैं । इस दिव्य महामार्ग में विना प्रस्थान किये अक्षरधाम की प्राप्ति संभव नहीं है । इस मार्ग पर एकांतिक परम भागवत भक्त ही चल सकते हैं । एक एवान्तिकं एकान्तिकम् । एक ही परब्रह्म परमात्मा भगवान पुरुषोत्तम नारायण ने अन्तिक अर्थात् नजदीक का स्नेही । अथवा इसके अलांवा दूसरा अन्य कोई साधन नहीं है । अपने पन की जि समें बुद्दि हो वही एकान्तिक भक्त कहा जायेगा । एकान्तिक भक्त होने के लिये किसी समर्थ पुरुष का सहवास करना पडता है । ऐसे समर्थ भगवान बद्रीपति श्री नरनारायणदेव के विना दूसरा कोई अन्य नहीं है । भगवान श्री नरनारायणदेव के विना कोई अन्य नहीं है । भगवान श्री नरनारायणदेव के विना कोई अन्य नैष्ठिक ब्रह्मचारी समग्र ब्रह्मांड में कोई नहीं है । इसी भाव से भगवान श्री स्वामिनारायण अपने आश्रितों को भी ऐसी ब्रह्मचर्य की दृढता प्राप्त होती है । इस दृढता की परंपरा बनी रहे इसके लिये उद्धव संप्रदाय में ऋषिरुप धारण करके जगत के हित के लिये तप करने वाले श्री नरनारायणदेव भगवान का आश्रय लेकर पूजा-सेवा उपासना करनी चाहिये । वचनामृत में सर्व प्रथण वचनामृत के ४८ वें में कहे अनुसार अपने गूढ संकल्प की मूर्ति के लिये सर्व प्रथम महामंदिरो का निर्माण कार्य प्रारंभ किया । बाद में बद्रीपति भगवान नरनारायणदेव के दिव्य स्वरुप को पसंद करके संप्रदाय में सर्व प्रथम तथा सर्वत्र मंदिर में यही दिव्य स्वरुपकी स्थापना करने का संकल्प किया था । प्रत्येक मंदिरो में अर्चास्वरुप के लिये मूर्तियों के प्रतिष्ठा की वात चली तो भगवान स्वामिनारायण ने श्री नरनारयणदेव की सर्व प्रथम मूर्ति को मंगवाई । इसके बाद उसी मूर्ति को प्रतिष्ठित किये । भक्तों के इच्छानुसार श्रीनरनारायणदेव के दिव्य स्वरुपों के नाम को बदलकर सभी मंदिरो में प्रतिष्ठा किये थे । जैसे - मूली में तथा जूनागढ में रणछोड त्रिकम नाम से प्रतिष्ठित किये । वडताल में श्री नरनारायणदेव की ही प्रतिष्ठा किये लेकिन उन दिव्य स्वरुपों को सावदा तथा धरगाँव में अलग-अलग भक्तों को सौं पदिये । इन्ही की सेवा करने की आज्ञा किये । इसी तरह अमदावाद तथा

भुज के अलांवा महामन्दिरों में अपने स्वरुपों की प्रतिष्ठित किया । लेकिन वडताल में श्री लक्ष्मीनारायणदेव, मूली में श्री राधाकृष्णदेव, धोलका में मोरली मनोहर देव, जेतलपुर में श्री रेवती बलदेवजी, जूनागढ में श्रीराधारमणदेव, धोलेरा में श्रीमदन मोहनदेव, गढपुर में श्री गोपीनाथजी देवजी इत्यादिनामो से प्रतिष्ठित अपने स्वरुपों की उपासना करने की आज्ञा किये । इन दिव्य स्वरुपों की उपासना करने से दिव्य धाम की प्राप्ति होती है। इन सभी स्वरुपों में भगवान श्री स्वामिनारायण का ही स्वरुप है।

यह वात सभी शास्त्रो में वर्णित है। नन्द-संतोने भी अपने कीर्तनो में प्रतिपादन किया है। जिस तरह मुक्तानन्द स्वामी - हे सहजानंद स्वामी श्री स्वामिनारायण भगवान आप कैसे भगवान हैं ? यह आरती के शब्दों में स्पष्ट कर रहे हैं - नारायण नर भ्राता.... ऐसी वात निष्कुलानंद स्वामी - छो एकने दिसो छो दोय ..... तेनो भेद जाणे जन कोय। इस तरह के असंख्य वचन संप्रदाय में से मिल रहे हैं। उसे समझ विचार कर श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में नियम-प्रतिज्ञा करके श्रीजी महाराजकी आज्ञा में अपनी नित्यपूजा में श्रीनरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में नियम-प्रतिज्ञा करके श्रीजी महाराज की आज्ञा के अनुसार अपनी नित्य पूजा में जो छायाचित्र प्राप्त किये है उसे रखकर पूजा कीजियेगा। इससे आनेवाली परंपरा में सुखशान्ति मिलेगी पारलौकिक सुख मिलेगा सभी लोग इसे समझें और जीवन में उतारें - अस्तु, जयश्री स्वामिनारायण।

समस्त सत्संग को सूचना

साधु घनश्यामप्रकाशदास गुरु स्वामी जगतप्रकाशदासजी अमदावाद (जमीयतपुरावाला) पीछे कितने समय से संप्रदाय के तथा मंदिर के विरुद्ध प्रवृत्ति करने वाले असामाजिक तत्त्वों तथा व्यक्तिओं के साथ निकटता का सम्बन्ध रखकर संप्रदाय को बदनाम करनेवाले तत्त्वों को प्रोत्साहन तथा सहयोग दे रहे हैं। इस वात की सत्यता प्रमाणित होते ही हरिभक्तों ने दंडात्मक कार्यवाही करने के लिये निवेदन किया जिससे श्री नरनारायणदेव त्यागी समुदायने ता. २५-१-२०१५ को अमदावाद मंदिर में लिखितपत्र द्वारा उन्हें बहिष्कृत करने का सुझावदिया है इसलिये वह व्यक्ति हमारी आज्ञा से अलग होकर वर्तन करता है इसकी जानकारी होते ही साधु त्यागी दीक्षा को रद्द करके मंदिर के त्यागी नागरिक पद से बहिष्कृत करके संप्रदाय से निकाल दिया गया है। इसलिये ता. २८-२-२०१५ से उनके नाम का अस्तित्व श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर से नहीं रहेगा इसलिये इन के साथ किसी प्रकार का धार्मिक व्यवहार न रखने के लिये सभी सत्संगियों को सूचित किया जाता है।

- आज्ञा से

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस
shreeswaminarayan9@gmail.com

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर लाईव दर्शन तथा डेईली दर्श; के लिये
www.swaminarayan.in
की अवश्य मुलाकात कीजिये ।

एन्ड्रोइट तथा आई.ओ.एस. फोन के लिये नये निर्णय २०७१-७२ के वर्ष की एप्स अबग्रेडेशन करने के लिये उपलब्ध ।

यज्ञोपवित

मनुभावोना उद्गारो

संकलनः प्रफुल खरसाणी

आनंदीबहन पटेल - माननीय मुख्यमंत्रीश्री, गुजरात राज्य

आज आनंद ही आनंद है। महिला वर्ग को आगे बैठने का समय आ गया है। स्वामिनारायण भगवान ने १९२ वर्ष पूर्व जो प्रयास किया उसी का यह प्रतिफल है। इस पंथ में करीब ३५ हजार से भी अधिक महिलायें कर रही है, यह बहुत ही आनंद का विषय है। स्वामिनारायण भगवान के मार्गदर्शन में साधु-संत समाज के उत्थान का कार्य करते रहते हैं। यह सब कुछ अपने जीवन में उतारने के बाद ही क्रियान्वयन करते हैं। उपदेश देना यह अलग बात है, जीवन में उतारना अलग बात है। इसीलिये भगवान स्वामिनारायणने अपने मार्गदर्शन में तथा अपनी उपस्थिति में सतीप्रथा को रोकवाये जिससे यह प्रथा अब कहीं देखने में नहीं मिलती। सती प्रथा ऐसी प्रथा थी कि पुरुष के मृत्यु होने पर उसकी चिता पर जीवित पत्नी की इच्छा हो या न हो उसे जला दिया जाता था। ऐसी स्थिति में उसके सामने किसी को आवाज उठाने की ताकात नहीं थी। उसी परिप्रेक्ष्य में भगवान स्वामिनारायण का गुजरात की धरती पर आना और उन्हीं की प्रेरणा से समाज के अग्रगण्य लोग आगे आये और अंग्रेज सरकार से नियम पारित करवाये। इस नियमन को सुचारु ढंग से चलाने के लिये उस समय अग्रगण्य लोग आगे आकर इस कार्य में सहयोग करने लगे। धीरे-धीरे सती प्रथा बंद बुई और आज के समय नाबूद हो गई है।

शंकरसिंह वाघेला : मार्गदर्शन के लिये धर्म का आश्रय। बड़े बड़े डांकू, आसामाजिक तत्व, बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं को अपनी बाडी से प्रेरित करने वाले अपने व्यवहार से सभी को वशीभूत करने वाले भगवान श्री स्वामिनारायण ने अमदावाद में श्री नरनारायणदेव को स्थापित किया जो पूरे संप्रदाय का मूल स्थान है। शाखाये तो कई होती है लेकिन सभी का एक ही मूल होता और वह मजबूत होना चाहिये। इस कार्यक्रम में त्रिदेवों का पूर्ण सहयोग रहा है। जिससे हम महोत्सव का आयोजन सरलता से कर सके। इस में आने से मैं अपने को धन्य मानता हूँ। हमारा कार्य क्षेत्र राजकारण है - आर्टीफिशियल बनना पडता है। हमें मन में बड़ा आनंद हो रहा है और मनन करने का मन हो रहा है।

नीतिन पटेल (माननीय मंत्रीश्री आरोग्य विभाग गुजरात राज्य) : सरकारी मकान हो या मंदिर उसका जीर्णोद्धार करना आवश्यक होता है। लेकिन उसे उत्सव के रुप में मनाया जाय उसमें भी सामाजिक कार्यक्रम के साथ, यह एक प्रशंसनीय एवं आनंद का विषय है। मेडिकल - दिन - पर्यावरण दिन, महिला दिन मनाकर सत्संग के साथ समाज का रचनात्मक कार्य किया गया है।

नरहरी अमीन : समाज को सुसंगठित रखना जनता को निरोग रखना यह सभी उत्तरदायित्व राज्य सरकार का है, लेकिन सहयोग के माध्यम से श्री स्वामिनारायण संप्रदाय ने प्रशंसनीय कार्य किया है . अगल-अलग दिन को उत्सव का रुपदेकर सरकार के कार्यक्रम को अपना समझकर बहुत बड़ा सामाजिक कार्य किया है। आज देश-विदेश में समाज को विकसित करने में संप्रदाय का पूर्ण योग दान रहा है।

महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी (कालुपुर) : सत्संग बढे या घटे वह सब श्री नरनारायणदेव की इच्छा से होता है। इस संप्रदाय में सभी लोग कंधे से कन्धा लगाकर काम करते हैं। इससे अखंडिता बनी रहती है। इस उत्सव के लिये हम देश-विदेश सभी जगह गये हमें ऐसा था कि श्री नरनारायणदेव का उत्सव है इस लिये लोग अंजली भरकरदान देंगे लेकिन लोग टोपली भरकर दान दिये है। इस लिये भगवान श्री नरनारायणदेव किसी का अपने पास नहीं रखते इसके बदले में अनंत गुना करके वापस देते हैं। संत, कमेटी के सदस्य तथा हरिभक्तों के सहयोग से यह भगीरथ कार्य पूर्ण हुआ है। सभी का हृदय पूर्वक आभार

स.गु. निर्गुणदासजी स्वामी : परमात्मा के स्वरुप का ज्ञान किसी युनिवर्सिटी में नहीं मिलता लेकिन पांच ज्ञानेन्द्रियों को परमात्मा में आत्मसात करने के बाद यह मोक्षरुपी परमतत्व की प्राप्ति संभव है। श्री नरनारायणदेव के पास जाकर जो भी कुछ मांगता है वह खाली हाथ वापस नहीं जाता । श्री नरनारायणदेव आप सभी पर प्रसन्न हो ऐसी प्रार्थना।

स.गु. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम)

श्री नरनारायणदेव तथा स्वामिनारायण भगवान दोनो एक ही है, यह वात इस उत्सव से प्रतिपादित हो गयी है। यहाँ से इस प्रसंग का प्रारंभ हुआ और यही मूल भी है। श्री स्वामिनारायण भगवानने अमदावाद में श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा की उस समय भारत देश में ५ लाख मंदिर थे, लेकिन श्री नरनारायणदेव का मंदिर नहीं था। इसलिये कालुपुर में श्री नरनारायणदेव का प्रथम मंदिर तथा संप्रदाय का भी सर्व प्रथम मंदिर प्रतिष्ठित हुआ। आज परिवार दिन है - इस परिवार दिन के अवसर पर यहाँ पर धर्म कुल परिवार की तीन पीढी एक साथ हम सभी को दर्शन दे रही है।

शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी (सेक्टर-२३, गांधीनगर) : पहले के समय में ६० हजार वर्ष तक तप करने से भी जो मोक्ष सुलभ नहीं था उसे महाराजने सरल कर दिया। श्रीजी महाराज मध्य के ३५ वें वचनामृत में कहे है कि हमारे हरिभक्त जहाँ-जहाँ पर एक साथ मिलकर उत्सव किये हों, हमारी पूजा किये हों, हमारे लीलाचरित्र का गान किया गया हो ऐसे स्थानों का या उत्सव की झांकी का अंतिम समय में स्मरण हो जाय तो उसका मोक्ष अवश्य होगा। हमें ६० हजार वर्ष तक तप करने की जरुरत नहीं। इस उत्सव के दर्शन का या धर्मकुल के दर्शन का अंतिम समय में स्मरण हो जाय तो निश्चित ही उसका मोक्ष होगा। यह उत्सव इसलिये भी विशिष्ट है कि इस उत्सव में गरीब, अमीर, बिमार विद्यार्थी, विकलांग इत्यादि लोगों का स्मरण किया गया है। इस उत्सव में से कुछ न कुछ सभी को मिला है

शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (महंत स्वामी जेतलपुर) : श्री नरनारायणदेव के सिवाय अन्यत्र आप लोग मोक्ष का विचार मत करना। कारण कि श्री स्वामिनारायण भगवान जो स्वरुप देकर गये है उसकी तुलना किसी जगह और किसी देव से नहीं की जा सकती। दो सो वर्ष से यह आपनी परंपरा चलती आ रही है। श्री नरनारायणदेव देश कहीं से खंडित नहीं हुआ है। कभी होने वाला भी नहीं है। छोटा उत्सव हो या बड़ा उत्सव हो उसमें भगवान स्वामिनारायण तथा भगवान श्री नरनारायणदेव साथ में रहते हैं।

पुराणी स्वामी धर्मनंदनदासजी (महंतश्री, भुज) : वास्तव में आज का उत्सव सुवर्ण सिंहासन के उद्घाटन का कार्यक्रम बहुत ही आनंदप्रदान करने वाला है। इस उत्सव की समानता ही नही हो सकती, न भूतो न भविष्यति कहा जा सकता है। श्रीजी महाराज के समय के समान संतगण आज भी है। उस समय की भांति आज भी वैसे हरिभक्त मिलते हैं। सभी संतगण तथा हरिभक्तगण निष्काम सेवा करते हैं। किसी फल की आशा के विना मात्र भगवान तथा आचार्य महाराजश्री को प्रसन्न करना ही एकमात्र लक्ष्य है। अक्षरधाम यही है, ऐसा दिव्य सत्संग प्राप्त हुआ है। हमें स्वयं को सौभाग्य शाली समझना चाहिए। संत-हरिभक्त भिन्न-भिन्न स्थानो से पधारकर, उत्सव का आनंद प्राप्त किये। हम भुज के संतो पर अति प्रसन्न है।

स.गु. महंत स्वामी श्यामसुन्दरदासजी (मूली) : परम कृपालु श्री नरनारायणदेव तथा मूली निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से हम सभी को ऐसा दिव्य अलौलिक श्री नरनारायणदेव के उत्सव का लाभ मिला है। इसका सदा स्मरण करते रहियेगा। यह मोटेरा की भूमि भगवान के प्रसादी की भूमि है। यहाँ पर श्रीजी महाराज बारम्बार पधारकर तीर्थ बना दिया है। इसके अलावा यह उत्सव भी इसी भूमि पर मनाया गया। इससे यह मोटेरा गाँव धन्य हो गया।

जादवजी भगत (भुज) : जिस में देव विराजमान हैं उस मंदिर का जीर्णोध्धार चार-चार महंतो ने किया। जीर्णोद्धार तो बहुत अच्छा हुआ साथ में सिंहासन का भी जीर्णोध्धार हो गया। आप सभी हरिभक्त तिजोरी खोल कर देव की सेवा की है, जो भी आप लोग किये वह देव के लिये किये। जो बीज आप लोग लगाये है उसका फल आप लोंगो को अवश्य मिलेगा। जो आपके घर में सन्तान होंगी वे अपना प्रारब्ध लेकर आयेंगी।

पी.पी. स्वामी (छोटे) : इस उत्सव को करने की आज्ञा प.पू. महाराजश्रीने पूरे वर्ष तक भजन करने की शर्त पर दी थी। जब स्थल पसंद करने की बात हुई तो प.पू. आचार्य महाराजश्री इस स्थान पर आये और विना गाडी में से उतरे ही यहीं पर करने का आदेश कर दिये। कारण यह कि इसी मोटेरा गाँव में भगवान स्वामिनारायण दश-दशवार आये थे। इससे पवित्र जगह और कौन हो सकती है।

शा.स्वा. प्रेमप्रकाशदासजी (भुज)

ब्र.स्वा. वासुदेवानंदजी (छपैया)

शा.स्वा. जगतप्रकाशदासजी (अमदावाद)

स्वा. गुरुप्रसाददासजी (कांकरीया)

शा. स्वा. नौतमप्रकाशदासजी (वडताल)

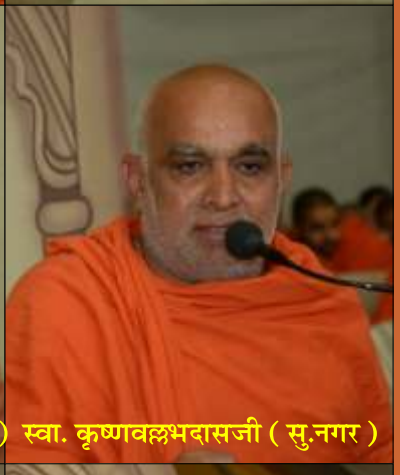
स्वा. कृष्णवल्लभदासजी (सु.नगर)

बापू स्वामी (वडताल)

शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी (जूनागढ)

एस.पी. स्वामी (गढडा)

शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजी (मूली)

शा.स्वा. भक्तिहरिदासजी (मूली)

शा.स्वा. देवकृष्णदासजी (भुज)

शा.स्वा. भगवतजीवनदासजी (भुज)

शा.स्वा. अक्षरप्रकाशदासजी (भुज)

शा.स्वा. ज्ञानप्रकाशदासजी (अमदावाद)

शा.स्वा. धर्मविहारीदासजी (ढसा)

शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी (नारणपुरा)

शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी (कलोल)

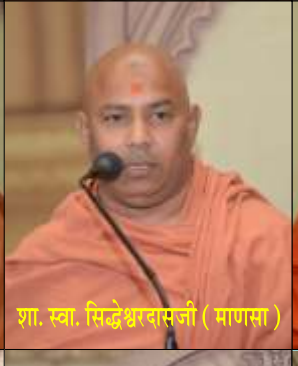
शा. स्वा. सिद्धेश्वरदासजी (माणसा)

शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी (मथुरा)

शा.स्वा. रघुवीरचरणदासजी (सोकली)

शा.डी.के. स्वामी (प्रयाग)

मंत्रीश्री प्रदीपसिंह जाडेजा

श्री भीखाभाई (नैरोबी)

श्री उदय गौसलीया (अमेरिका)

कॅमेरा कॉर्नर

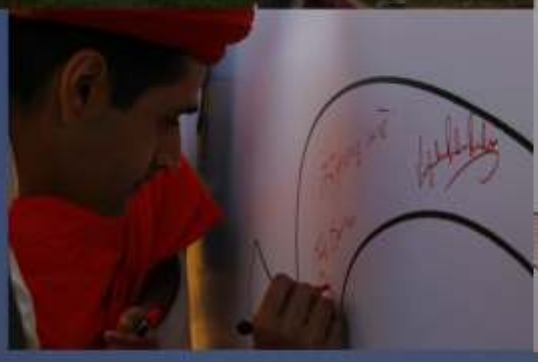

श्री स्वामिनारायण

कलियुग में सत्ययुग का दर्शन अर्थात् श्रीनरनारायणदेव महोत्सव

शास्त्री स्वा. नारायणवल्लभदासजी
(महंत स्वामिनारायण मंदिर वडनगर)

ज्यारे घणाक मनुष्य भगवानना एकान्तिक भक्त थाय छे त्यारे कलियुग मां विशेष पण सत्ययुग थाय छे. (वचनामृत वडताल-६)

उपरोक्त वचन श्रीजी महाराज का है । श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव में प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा यह लेख लिख रहे हैं । ''कलियुग में सत्ययुग'' का दर्शन करके धन्यता को प्राप्त किये । यह भगवान के एकान्तिक भक्त के लिये सार्थक बनता है । श्रीनरनारायणदेव महामहोत्सव में जहाँ भी दृष्टि करें वहाँ स्वामिनारायण, स्वामिनारायण तथा सेवा, स्मरण एवं सत्संग की सरिता बहते हुये दिखाई दे रही थी ।

मीराबाई के जहर को प्रभु ने अमृत बनाया यह मात्र एक ऐतिहासिक घटना नहीं है । परंतु यह तो विश्व तथा विश्वम्भर के स्वभाव का शास्वत परिचय है । जहर उगलने का काम संसार का है अमृत वर्षा करना जगदीश्वर का काम है । इस श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव में अमृतवर्षा का अनुभव करके तन, मन, धन की सार्थकता को श्री नरनारायणदेव के चरणों में न्यौछावर करके इस कलियुग में सत्ययुग का दर्शन हुआ है । यह दर्शन सन्त-हरिभक्तों में सदा बना रहे इसके लिये सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने गढडा प्रकरण के ४८ वें वचनामृत में स्वमुख से आज्ञा की है कि सभी लोग सावधान होकर सुनें, एक वार्ता कहते हैं । यह सुनकर सभी लोगों ने कहा कि हे महाराज कहिये । बाद में महाराजने कहा कि, ''हमारी आज्ञा है कि सभी हरिभक्त मात्र श्री नरनारायणदेव की आठ प्रकार की मूर्ति में से जो भी हो वह चित्र प्रतिमा क्यों न हो उसकी पूजा करें । इसलिये सभी हरिभक्त प्रातः स्नान करके - श्री नरनारायणदेव की पूजा करे बाद में प्रदक्षिणा करके साष्टांग प्रणाम करके भगवान से मांगें कि हे भगवान् ! आप चार प्रकार के कुसंगियो से रक्षा कीजिये । चार प्रकार के कुसंगियो में से - १ कूडापंथी, २ शक्ति पंथी, ३ शुष्कवेदान्ती, ४ नास्तिक, इन चार प्रकार के कुसंग से रक्षा करना ।

इसके बाद प्रार्थना करना कि हे महाराज काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, देहाभिमान जैसे शत्रुओं से भी रक्षा कीजियेगा । इसके अलांवा अपने भक्तों का समागम बना रहे यह भी दीजियेगा । ने तमे सर्वे हरिभक्त एम लावशो माटे एतो कागज ऊपर चित्रामण छे ते आपणी केम कुसंग थकी रक्षा करशे ? एवो भाव तो कोई दहाणे लावसो जमा, कां जे अमें तो सत्पुरुष छीए ते अमारी आज्ञाए करीने तमे सर्वे नरनारायणनी पूजा

राखशो तो अमारे अमे नरनारायणने तो सुधो मन मेळाप छे । ते अमे नरनारायणने कहीशुं जे हे महाराज ! जे पंचवर्तमान मां रहीने मारी आवेल जे तमारी मूर्ति तेने पूजे तेमां तमे अखंड वास करीने रहेजो । इसलिये ए नरनारायणदेव छे तेने अमे स्नेहरुपी पाशे बांधीने जोरावरी राखीशुं । माटे तमे सर्वे एम निश्चे जाणजो जे ए मूर्ति ने नरारायणदेव पंडे ज छे । एवुं जाणीने कोई दहाडे मूर्ति अपूज रहेवा देशोमां अने प्रातः कालमां स्नान करीने भगवाननी पूजा करवी अने पछी बीजो धन्धो करवो अने, ज्यां सुधी पंच वर्तमानमां रहीने ए नरनारायणदेवनी पूजा करशों त्यां सुधी ए मूर्तिने विषे श्री नरनारायणदेव विराजमान रहेशे । ए अमारी आज्ञा छे ते सर्वे दृढ करीने मानजो । एवी रीते श्रीजी महाराज बोल्या ते वचन सर्वे हरिभक्ते माथे चढाव्या ।(वच. प्र.प्र. ४८)

उपरोक्त श्रीजी महाराजकी आज्ञा अमतृवर्षा करते हुये बताती है कि श्री नरनारायणदेव की पूजा प्रतिदिन जो करेगा उसे ''कलियुग सत्य युग'' जैसा लगेगा । श्रीजी महाराज का जो अनन्य भक्त वह इस आज्ञा को शिरोधार्य करके सत्संगी मात्र हरिभक्त होने को सार्थक करेगा । वही सच्चा हरिभक्त कहा जायेगा ।

श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव में अपने धर्म गुरु श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा पू. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी तथा पू. बड़ी गादीवालाजी तथा संत महंत भी श्रीहरि के आज्ञानुसार श्री नरनारायणदेव की महिमा को समझाया जिससे श्री नरनारायणदेव के महामहोत्सव को सच्चे अर्थ में साकार तथा सार्थक करके सभी भक्त समुदाय को देश तथा विदेश में कलियुग में सत्ययुग का दर्शन हुआ ।

संसार में जो लोग श्रीजी महाराज की मूलभूत आज्ञा एवं सिद्धांत से दूर होजाते है वे डूब जाते है, लेकिन जो लोग श्रीजी महाराज की आज्ञा तथा सिद्धान्तानुसार सत्संग एवं भक्ति अविरत करते रहते है उनका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व श्रीहरि स्वयं लेते है ।

स्वामिनारायण संप्रदायके इतिहास में सुवर्ण अक्षर में लिखा हुआ है कि श्री स्वामिनारायण भगवानने विश्व का सर्व प्रथम मंदिर अमदावाद में निर्मित कराकर अपने बाहों में भरकर वेदोक्त विधिसे श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित करके ''यावत् चन्द्र दिवाकरौ'' मोक्ष मार्ग खोल दिया ।

अमदावाद श्रीजी महाराज के चरण कमल से पावन भूमि मोटेरा गाँव के आंगन में संपन्न श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव वार-वार स्मरण पथमें आता रहेगा । जिस तरह नरसिंह महेता को लोगो ने पागल कहा, मीरा को दीवानी कहा, सूरदासजी को पागल समझा ठीक उसी तरह भक्ति मार्ग में सत्संगी समुदाय पागल जैसा दिखाई दिया । श्याम रंग सामे दूसरा रंग फीका लगे । इस तरह श्री नरनारायणदेव के चरण कमल में अनेकवार मस्तक झुकाकर जीवन समर्पित करने वाला जीवात्मा माया के भय से रहित होकर संसार के गमनागमन से मुक्त हो जाता है ।

अमदावाद मंदिर के वर्तमान महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा कमेटी के सदस्य प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मंदिर का जीर्णोद्धार, सुवर्ण सिंहासन तथा अन्य मरम्मत का कार्य रात दिन अथक परिश्रम करके दान-भेंट में धन एकत्रित करके सर्वश्रेष्ठ जीव हितावह कार्य करके श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव को सार्थक किया - जिससे चारो तरफ जयजयकार होने लगी । यह सभी भक्तों के लिये जीवन के पाथेय में अनमोल खजाना बनकर रहेगा ।

अभिषेक

संत सन्मान

यादगार पणो

स्वामी-सेवक मिलन

भाग्य उस भूमि की जहाँ पर पधारे स्वयं धनी

– अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अमदावाद)

श्री नरनारायणदेव प्रत्यक्ष जहाँ पर विराजमान हों उस भूमि के भाग्य की क्या बात करें ! विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर – अमदाबाद में प्रत्यक्ष विराजमान ऐसे श्री नरनारायणदेव की महिमा अद्‌भुत है।

अपने धनी, अपने मालिक – शेठ या बोस जब सामने से चलकर अपने घर स्वयं मिलने के लिये आवें तो स्वयं कितना आनंद होता है। बस इसी तरह अखंड कोटि ब्रह्मांड के अधिपति भगवान श्री स्वामिनरायण आज से करीब १९२ वर्ष पूर्व संवत १८७८ फाल्गुन शुक्ल तृतीया को अमदावाद (श्रीपुर-श्रीनगर) शहर के बीच में श्री नरनारायणदेव के स्वरुप में स्वयं चलकर अपने इस नगर में आये थे। आज भी इसनगर में विराजमान होकर दर्शन का अनंत सुख प्रदान कर रहे हैं। इससे भी अधिक महत्व इस भूमि का है जहाँ पर स्वयं प्रभु विराजमान हुये और अहोभाग्य हम लोगों की हो गयी।

जब अपने घर, मकान, फ्लेट, बंगला, इत्यादि जो भी हो उसके जीर्ण होने पर मरम्मत का काम कराकर नवा रंगरुप देकर उसके निमित्त अपने सगे संबन्धी को आनंद के साथ आमंत्रित करके उत्सव मनाते हैं। जब कि यहाँ पर विराजमान स्वयं हमारे इष्टदेव संप्रदाय के अधिपति ऐसे श्री नरनारयणदेव की बात है। अर्थात् समस्त सत्संग परिवार मिलकर महाप्रभु के उत्सव को जिनजिन लोगो ने मनाया उनके भाग्य की क्या बात ?

"इस श्री नरनारायणदेव के स्वरुप में तथा हमारे स्वरुप में लेशमात्र भी फर्क नहीं है।" इस महिमा के साथ महाप्रतापी तथा भरत खंड के अधिपति ऐसे श्री नरनारायणदेव का मंदिर आज नये रंगरुप में देदीप्यमान होकर भासित हो रहा है। समग्र मंदिर के परिसर को नवा रुप ही देदिया गया है। मंदिर की फर्श श्वेत संगमरमर से सुशोभित हो रही है। तीनो गर्भ गृह का नूतन सुवर्ण सिंहासन अत्यंत तजोमय दिखाई देता है। ऐतिहासिक सभा मंडप, अद्‌भुत कलाकारी युक्त हवेली, संतो का आवास स्थान तथा रंगमहल ये सभी नये रंग रुप को प्राप्त हो गये हैं। संक्षेप में विश्व का यह सर्व प्रथम मंदिर श्री स्वामिनारायण मंदिर सम्पूर्णरुप से नये सर्जन को प्राप्त हुआ है। यह कोई छोटा कार्य नहीं था। नितप्रति श्री नरनारायणदेव के मंगला, श्रृंगार आरती के दर्शनार्थ भक्तों का प्रवाह भी अविरत बहता ही रहा इसके साथ

रिनोवेशन का कार्य भी चालू था। सोमपुरा के भक्त छीनी हथौडी से पत्थरों पर गढाई का काम-ठन्ढी-गर्मी वरसात में भी करते रहे। यह कार्य कोई सरल नहीं था, फिर भी श्रीहरि की कृपा से विशाल कार्य परिपूर्ण हो गया।

इस विशाल कार्य के परिपाक रुप में हम सभी सत्संगी एक साथ मिलकर एक समृद्ध सत्संग परिवार की तरह ''श्री नरनारायणदेव महा महोत्सव'' खूब आनंद के साथ सम्पन्न किये।

झवेर भगत के महिमाशाली मोटेरा गाँव में अपने ही हरिभक्तों की विशाल जमीन हैं जिस में यह महोत्सव करने से उन भक्तों की भाग्य जग गयी जगह इतनी विशाल थी कि भीड़ अधिक होने पर भी धक्का-मुक्की कहीं दिखाई नहीं दी।

महोत्सव का इन्फ्रास्ट्रचर अद्‌भुत था । वर्तुल आकार की थीम थी। महोत्सव के परिसर का जो केन्द्र बिन्दु था वहीं पर श्री नरनारायणदेव का छोटा सा मंदिर था । उसमें भी श्री ननारायणदेव (श्री स्वामिनारायण भगवान) ही अपने विश्व के, सत्संग के तथा समग्र ब्रह्मांड के केन्द्रबिन्दु ही तो हैं। इस मदंर के चारो तरफ अनेकों प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये गये थे। प्रवेश द्वार आकर्षक तथा विशाल था। बांई तरफ आरोग्य विभाग था । यहाँ पर पांचोदिन तक विविधफ्री निदान केम्प खोला गया था। इसके अलांवा ''श्री स्वामिनारायण महामंत्र लेखन डोम'' था। इसकी रचना ध्यानाकर्षक थी। यहाँ पर श्रीहरि का एकाक्षी दिव्य स्वरुप विराजमान किया गया था। निर्गुण स्वामीने स्वयं सत्संगी जीवनके ८३४४ अनुष्टुप संस्कृत के श्लोकों को अपने हाथों से लिखकर प्रदर्शित किया था। यह अत्यंत आकर्षक प्रतिभासित होता था। डोम में आकर हरिभक्त श्री स्वामिनारायण महामंत्र का लेखन करते । यहाँ पर हरिभक्तों द्वारा लिखित ६१ करोड मंत्रोवाली नोटबुक प्रदर्शित की गयी थी । महामंत्र डोम के पास विशाल ''श्रीहरियाग यज्ञशाला'' थी । इसके बाद ''महापूजा मंडप'' था । इसके बगल में ''श्री स्वामिनारायण धुन मंडप'' था। पांचो दिन तक प्रातः ८ बजे से रात्रि ८ बजे तक इस तरह १२ घन्टे तक अखंड धुन गाँव-गाँव के हरिभक्त करते रहते थे। इस कार्य में आगंतुक भक्त जुडते रहते।

इसके बाद प्रदर्शन विभाग था। यहाँ पर दो ओडियो विज्युअल शो तथा श्री स्वामिनारायण म्युजियम की प्रतिकृति का भी दर्शन कराया गया था। एक शोमें श्री नरनारायणदेव मंदिर महिमा तथा दूसरे शो में श्री नरनारायणदेव गादी के आचार्यश्रियों के कार्य कवन तथा जीवन की महिमा का गान दर्शाया गया था। दोनो अत्यंत मननीय तथा देखने लायक था।

इसके बाद विशाल सभा मंडप था । सत्तर

हजार स्त्री-पुरुष एक साथ इस सभा मंडप में बैठकर कथा श्रवण करते थे । इसके बाद इग्लु जैसे आकर के छोटे-छोटे डोम थे जिस में विविधसमितयों की तथा आफिसकी व्यवस्था थी ।

चारो तरफ टीवी के विशाल स्कीन पर देखा जा सकता था। जिस से सभा मंडप में आयोजित कथा या अन्य कार्यक्रमो का लाइवटेली काष्ट हो रहा था । इससे सभी कार्यक्रम चलते फिरते देखे जा सकते थे । जगह जगह पर शुद्ध पेयजलकी व्यवस्था थी । चलने के रास्ते पर नीले रंग की कंतान बिछाई गई थी । इससे धूल नहीं उडती थी । बाकी की भूमि में घास उगाई गई थी । सर्वत्र पानी का छिटकाव किया जाता था, इससे मिट्टी की महक चारो तरफ फैलती रहती थी । शिशिर ऋतु जैसा खुशनुमा शीतल वातावरण था । इसी वातावरण में नानाविधकार्यक्रम चलते रहते थे । ठन्ढे वातावरण में भोजन के स्वाद का भी आनंद मिल रहा था ।

इस महोत्सव का आयोजन कुछ अलग प्रकार का था । क्योंकि महोत्सव का प्रत्येक दिन ''विशेष दिन'' के रुप में प्रस्तुत किया जाता था । २४-१२-१४ बुधवार आरोग्य दिन, स्वयं के स्वास्थ्य का रखरखाव ही सच्ची भक्ति है ।

२५-१२-१४ गुरुवार पर्यावरणदिन, पर्यावरण का रखरखाव ही सच्चा धर्म २६-१२-१४ शुक्रवार को महिला दिन, घर में पुत्र का जन्म ही जन्माष्टमी । २७-१२-१४ शनिवार को परिवार दिन, परिवार के साथ बिताया गया समय ही प्रभु प्रार्थना ।

ऐसा लगता था कि धर्म-ज्ञान-वैराग्य-भक्ति सांप्रत समय में दर्शाया गया हो । महोत्सव का अन्तिम दिन रविवार २८-१२-१४ का दिन तो श्री नरनरायणदेव मय हो गया था ।

प्रातः ५ बजे से श्री नरनारायणदेव मंदिर में हरिभक्तों की भीड उमड़ पड़ती थी । प्रातः ६-३० बजे प्रात प. पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे और सीधे श्री नरनारायणदेव के गर्भगृह में प्रवेश करके अभिषेक प्रारंभ कर दिये । बाहर विशाल टीवी स्क्रीन पर लाईव दर्शन चालू था । ज्यों ही श्री नरनारायणदेव के मुखारविंद पर कलश जलाभिषेक हुआ कि ''श्री नरनारयणदेव की जय'' का घोष आकाश में व्याप्त हो गया । झालर बजने लगी थी । ज्यों ज्यों वैदिक मंत्रो से अभिषेक होता गया त्यों त्यों भावुक भक्तों के भाव नेत्र जल के रुप में अभिषिक्त कर रहे थे । वाह महाराज ! वाह ऐसे उच्चारण करते हुये एक टक अभिषेक का दर्शन करते जा रहे थे ।

समग्र मंदिर का परिसर भक्तों की भीड़ के प्रवाह से परिपूरित हो गया था, इस तरह पांचो दिन तक ''महोत्सव'' देदीप्यमान हो उठा था । मोटेरा की तपोवन भूमि श्री नरनारायणदेव महोत्सव के आयोजन से सच्चे अर्थ में तपोमय बन गयी थी । आपस में मिलने के समय सभी जय श्री स्वामिनारायण कहकर अभिवादन करते स्वयं सेवक सभी को जयश्री स्वामिनारायण कहकर उन्हें सम्मानित करते । सभी को योग्य मार्गदर्शन देते । इस समय के कार्यक्रम में श्री नरनारायणदेव युवक सत्संगी बंधुओ का ''ड्रेस कोड'' भी अलग तरीके का था ।

लाल पीलो ने वादली मोर रंग कहेवाय ।
वाकीना बीजा बधा मेलवणी थी थाय ।।

मोर पिच्छ रंग का हाफ टी शर्ट तथा ब्लेक पेन्ट में सुसज्ज सभी सत्संग के शूरवीर, सन्निष्ठ स्वयं सेवक महोत्सव के रक्षक थे । श्री ननरारायणदेव महोत्सवमें वृहद सत्संग परिवार का स्नेह मिलता । आत्म संशोधन का यह उत्सव था । श्री स्वामिनारायण भगवान के आश्रित मात्र हाथ से ताली बजाकर धुन नहीं करते बल्कि अर्वाचीन युग की अपेक्षाओं तथा आकांक्षाओं को पूर्ण

भी करते हैं। पर्यावरण की रक्षा बेटी बचाओ अभियान, आरोग्य की उपासना इन सभी स्थितियों को समझते हैं। समाज के उपयोगी ऐसे आयोजन भी कर सकते हैं। अपना यह श्री नरनारायणदेव महोत्सव इस अर्थ में सार्थक सिद्ध हुआ है।

''श्री नरनारायणदेव महोत्सव की फलश्रुति''

अपने इस भव्य श्री नरनारायणदेव महोत्सव की फल श्रुति क्या ? इसका कारण यह कि अत्यन्त सूक्ष्म होते हुये भी बड़े कार्य करने में समर्थ हैं। इष्ट देव श्रीहरि सभी कारणों के कारण हैं। अर्थात् उनके निमित्त किया जाने वाला कार्यका आयोजन अनुपम ही होगा। श्रीपुर अर्थात् अमदावाद शहर की बड़ी भाग्य है जो कि यहाँ पर बदरीपति तथा भरतखंड के राजाधिराज ऐसे श्री नरनारायणदेव स्वयं आकर यहाँ विराजमान हुये हैं. आज भी यथावत विराजमान है। परंतु महोत्सव का जहाँ आयोजन हुआ उस भूमि की बड़ी भाग्य है जो श्रीहरि अर्थात् श्री नरनारायणदेव स्वयं महोत्सव में पधारकर सभी को पावन किये हैं और आनंदित किये हैं

मात्र वहाँ मैदान ही था महोत्सव करना है इस लिये गार्डनिंग सर्व प्रथम वहाँ किया गया गार्डनिंग के कोन्ट्राकटर भी बड़े आश्चर्य में पड़ गये थे कि इतने स्वल्प समय में इस विशाल भूमि पर हरियाली घास, सुंदर रंगबिरंगे फूल तैयार हो जायेंगे ? उन्हीं के शब्द हैं ''श्री नरनारायणदेव की कृपाविना आवी अने आटली सुंदर हरियाली नाज पांगरी शके , श्री नरनारायणदेव का यह महिमागान ही इस महोत्सव की फलश्रुति है अपने जीवन को तथा अपने सत्संग को कौन हराभरा रखता है ? मात्र अपने इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान श्री नरनारायणदेव, अन्यथा कोई नहीं।

यहाँ आनेवाले सभी भक्तजनों को यह महोत्सव बड़ा अच्छा लगा। उन्हें क्यों अच्छा न लगे ? धनी स्वयं पधारे थे। श्री नरनरायणदेव स्वरुपमें श्री आचार्य महाराजश्री के स्वरुप में तथा सन्त स्वरुप में तथा भक्तों के स्वरुप में पधारे थे। युवक मंडल के स्वयं सेवक स्वयं इस आयोजन की शोभा थे।

गढपुर में श्री गोपीनाथजी मंदिर में आगन्तुक भरवाड के मन में भगवान की मूर्ति तो बैठ ही गयी साथ में मंदिर का भव्य दरवाजा भी; वहाँ सभी से कहते कि मंदिर का दरवाजा अवश्य देखियेगा। अन्तकाल में उसी का स्मरण करते रहे जिससे महाराज संतो के साथ पधारे और अक्षरधाम में ले गये।

अपने महोत्सवों का यही हेतु है। इसमें से कुछ भी अन्त समय में स्मरण बना रहा तो अक्षरधाम की प्राप्ति होगी।

अंत में महोत्सव के आयोजन में तन, मन, धन से मदद करने वाले सभी भाई-बहनों को जयश्री स्वामिनारायण।

श्रीमान गंगारामभाई, महादेवभाई पटेल
सह परिवार (मेमनगर)

प.भ. रतीभाई खीमजीभाई पटेल
(सदस्य) अमदावाद

प.भ. संजयभाई तथा जयेशभाई

श्रीमान जयदेवभाई तथा मनोजभाई ब्रह्मभट्ट
– सह परिवार

प.भ. लालजीभाई वेकरीया

श्री माधवजीभाई शामजीभाई भुडीया
तथा परिवार - यु.के.

श्री मावजीभाई करशनभाई राजाणी
तथा परिवार - सीडनी

श्री शरदभाई गोविंदभाई पटेल
तथा परिवार - अमदावाद

स्वयंसेवक

મહોત્સવમાં સ્વયંસેવકોને ભેટમાં આપેલ પ્રસાદીની મૂર્તિ

श्रीनरनारायणदेव महोत्सव

एक विशिष्ट उत्सव

- डी.एस. पटेल (जायन्टस ग्रुप इन्ट. फेड ३ बी)

भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा स्थापित सर्वोपरि संप्रदाय के अनेक विशिष्टताओं में से एक विशिष्टता उत्सवो की परंपरा है । उसी परंपरा में अनेक जीवों के कल्याण के लिये अमदावाद श्री नरनारायणदेव गादी की छत्रछाया में अनेको महामहोत्सव मनाये जाते रहे हैं। स.गु. आनंदानंद स्वामीने आज से करीब १९२ वर्ष पूर्व अहमदावाद में विश्व में सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में निर्मित करवाया था । जिसके जीर्ण होने पर जीर्णोद्धार का कार्य तथा नूतन सुवर्ण सिंहासन के उद्घाटन के उपलक्ष्य में ता. २४-१२-१४ से ता. २८-१२-१४ तक भव्याति भव्य श्री नरनारायणदेव महोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया । यह उत्सव अनेकों प्रकार से विशिष्ट था । प.पू. आचार्य महाराजश्री की दीर्घ दृष्टि के कारण यह उत्सव ''धर्म द्वारा समाज जागृति का प्रयास'' के रुप में मनाया गया । समाज के ४ मुख्य विषयों पर महत्व दिया गया । जिस में क्रम से आरोग्य दिन, पर्यावरण दिन, महिला दिन, परिवार दिन के रुप में मनाया गया । सभी कार्यक्रम उन-उन विषयों के निष्णांतो द्वारा प.पू. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में समग्र सन्त-हरिभक्तों को ज्ञान प्रदान किया गया था ।

आरोग्य दिन को गुजरात के गणमान्य डोक्टरों के साथ UNICEF तथा WHO के गुजरात के माननीय प्रतिनिधिउपस्थित होकर समग्र सभा को एक स्वास्थ्य प्रदशैली में जीने का मार्गदर्शन दिया गया था। रोग होने के बाद रोग निवारण करने के अनेक उपाय है । शिक्षापत्री के अनुसार आहार विहार हो तो रोग कभी नहीं होगा । इस तरह के अद्‌भुत संदेश के साथ पू. आचार्य महाराजश्रीने इसकार्य का समापन किया था ।

पर्यावरण दिन को भारत के प्रख्यात पर्यावरण पद्मश्री कार्तिकेय साराभाई उपस्थित होकर सभी को पर्यावरण की रक्षा से जीवन की रक्षा का उपदेश दिया था । इस तरह का संदेश दिया था, इसके साथ ही अपने मंदिर द्वारा इस तरह के कार्य होते रहते है और आगे होते रहेंगे । इस तरह कहकर कार्योकी खूब प्रशंसा की थी । महिला दिन को गुजरात राज्य की मुख्यमंत्री श्रीमती आनंदीबहन पटेल की पावन उपस्थिति में पू. गादीवालाजी की उपस्थिति में सभी बहनें मिलकर स्त्री शिक्षा, स्त्री सशक्तिकरण तथा स्त्री सन्मान द्वारा ही भारत का

उज्जवल भविष्य है । इस तरह का सुंदर संदेश दिया था। इसके साथ अपने मंदिर द्वारा कन्या शिक्षा के लिये मुख्यमंत्री को ११,००,०००/- लाख का अनुदान भी पू. श्रीराजा के हाथ से दिया गया था। परिवार दिन को - आज के बदलते विपरीत युगमें एक परिवार के मानव जीवन में संस्कार की आवश्यकता तथा जीवन संचालन कैसे किया जाय इसके लिये सुंदर चर्चा माननीय सुरेशभाई गांधी द्वारा की गयी थी । मानव के जीवन में सुख, दुःख तथा एक परिवार में सभी एक दूसरे को समझ बूझकर रहने की संस्कृति है । इस तरह के सुंदर संदेश से आज का दिन पूर्ण हुआ था ।

इन चारो प्रकार के विषयों पर सुंदर प्रदर्शन का आयोजन भी किया गया था । इस तरह यह उत्सव मात्र धार्मिक परंपरा की पूर्ति के लिये नहीं अपितु एकविशिष्ट उत्सव के रुप में था ।

श्री नरनारायणदेव महोत्सव मेडीकल केम्प - श्री नरनारायणदेव महोत्सव में आरोग्य सम्बन्धमें मेडीकल केम्प रखा गया था । जिस में ब्लड डोनेशन, आईचेक अप, डेन्टल चेक अप, ओ.पी.डी. तथा डायाबीटीस चेक अप जैसे विविधकेम्पों का आयोजन किया गया था ।

जिस में ब्लड डोनेशन केम्प का आयोजन सिविल होस्पिटल तथा रेडक्रोस के सहयोग से किया गया था। जिस का प्रारंभ पूज्य आचार्य महाराजश्रीने ब्लड डोनेट करके शुभारंभ आशीर्वाद के साथ किये थे । जिस में पूज्य लालजी महाराजश्री तथा २५ जितने संतो ने भी ब्लड डोनेट करके प्रेरणा दी थी । जिस के फल स्वरुप ११११ जितने ब्लड युनिट को एकत्रित किया गया था । सभी रक्तदाताओं को सुदंर गीफ्ट प्रदान किया गया था ।

आईचेक अप केम्प का आयोजन नगरी होस्पिटल तथा तेज होस्पिटल के सहयोग से किया गया था । जिस में ७००० जितने व्यक्तियों के आंख का निदान किया गया तथा ३५०० जितने आवश्यकतावाले व्यक्तियों को किफायती पैसे में चश्मा प्रदान किया गया था ।

डेन्टल चेक अप केम्प का आयोजन कर्णावती डेन्टल को तेज के सहयोग से हुआ था । जिस में ३५०० जितने व्यक्तियों के दांत का निदान दिया गया तथा उन्हें योग्य मार्गदर्शन दिया गया था । विना मूल्य के दवा भी दी गयी थी ।

ओडीपी में १८०० जितने व्यक्तियों का आवश्यक निदान करके विना मूल्य की दवा दी गयी थी । इसके साथ डायाबीटीस चेक अप केम्प ३५०० जितने व्यक्तियों का निदान करके योग्य मार्गदर्शन दिया गया था ।

कान के बहराश वाले व्यक्तियों का निदान करके उन्हें स्वल्प कींमत में कान की मशीन प्रदान की गयी थी । महोत्सव में पांचो दिन तक जायन्टस ग्रुप के मित्रो तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के स्वयं सेवकों द्वारा सतत उपस्थित रहकर अनुशासित ढंग से केम्प को सफल बनाया गया था ।

पूज्य बड़े महाराजश्री ने सभी मेडिकल केम्प का साक्षात्कार करके उपस्थित सभी डोक्टर मित्रों को जायन्ट मित्रों को तथा स्वयं सेवकों को शुभाशीर्वाद दिया था । इस समग्र मेडिकल केम्प में जायन्टस ग्रुप के सभी आदरणीय सदस्योंने तन, मन, धन से सहयोग किया था । जिससे केम्प को सफल बनाने में योगदान मिला था ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

भारत के वडाप्रधान एवं गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का श्री स्वामिनारायण म्युझियम उद्घाटन प्रसंग पर उद्बोधन

पू. बड़े महाराजश्री, पू. महाराजश्री, पू. सतंगण सभी हरिभक्तगण, माताए और बहनें, गुजरात का विधानसभा सत्र चालु है, विधान सभा छोडकर यहाँ सभा में उपस्थित है। आपने जो जिम्मेदारी प्रदान कि है उसके लिए पुनः जल्दी वापस भी लौटना होगा। मन तो कह रहा है कि यही रुक जायें। परंतु सम्भव नहीं है यह। पू. बड़े महाराजश्री तथा पू. महाराजश्री तथा म्युजियम के आयोजन में जो भी कोई योगदान दे रहे है उन सभी को अभिनंदन देने आये है।

साधारण सी बात है कि मुख्यमंत्री होने के नाते गुजरात में प्रवासन उद्योग की प्रगति हेतु योजना के साथ प्रयास कर रहे हैं।

गुजरात में कई क्षेत्रों में विकास हुआ है। प्रवासन क्षेत्र ऐसा है कि उसका विकास अभी भी हो सकता है। गुजराती लोग अच्छे टुरीस्ट है। कही भी जाये आपको थेपला खाते हुए गुजराती अवश्य मिल जायेंगे। परंतु गुजरात में प्रवासन प्रवृत्ति की वृद्धि हेतु भूतकाल में ज्यादा प्रयास नही किए गए है। क्योंकि अपेक्षा से अधिक मात्रा में हमारे पास संपदा है। समस्त दुनिया को गुजरात में आने के लिये हम विवश कर सकते हैं इतनी संपदा है हमारे पास। इसी कार्य में प्रयासरत है हम। कच्छ के मित्रो के सहयोग से रंग में रंगोत्सव मनाया गया। कच्छ के लोगों को तो ज्ञान ही नही था कि दुनिया को मस्त करने वाला सफेद रण भी है हमारे पासे। दुनिया को इस बात का परिचय होने पर तीन दिन के बजाय अब रणोत्व तीस दिन का किया जाता है। पहले पांचसो से आठसो लोग ही आते थे। इस बार यह एक लाख से भी अधिक पहुंच गया है। इसी कारण कच्छ की आर्थिक स्थिति काफी बेहतर हुई है। इसी प्रकार गुजरात में क्या नहीं है। सब कुछ तो है। गीर के सिंह, या सोमनाथ हो या द्वारका हो, पोरबंदर हो। पू. सहजानंद स्वामी के जहाँ चरण कमल पडे हो। बहुत अपार संपदा है। हमारे पास इन सभी प्रयत्नो में से एक यह म्युझियम भी है। कोई प्रवासी यदि गुजरात में आयेगा तो अवश्य यह म्युझियम देखेगा। श्रद्धावान तो जायेंगे ही, जिनके हृदय में भगवान स्वामिनारायण के प्रति आस्था है, परंतु उसके अलावा अन्य लोग भी अवश्य आऐगे।

गुजरात के उद्योग की गति प्रदान करने का उत्तम कार्य इसी म्युझियम के द्वारा होगा। यह बात हुई मेरे सरकारी मुख्यमंत्री विचारधारा की, क्योंकि मेरे मस्तिष्क में सदैव गुजरात का विकास कैसे हो, प्रवासन प्रवृत्ति कैसे वृद्धि प्राप्त करे, यही सब चलता रहता है। परंतु जो बात मेरे हृदय को स्पर्श करती है वह यह है म्युझियम आज तक किसके बने है तो राजा-महाराजाओं औ के तो। लेकिन यह म्युझियम तो एक संत का है। आध्यात्मिक पुरुष का है म्युझियम भाग्य से ही देखने को मिलता है। यह कार्य गुजरात की धरती पर ही सिद्ध हो पाया है। म्युझियम के अंदर किसी राजा

महाराजा की कथा नहीं है। परंतु सामान्य मनुष्यो की कथा है। फलाने गाँव में भगवान गये थे और किसी के घर पर भोजन ग्रहण किये। कहीं यज्ञ करते और यज्ञ के अंदर क्या हुआ इस प्रकार के प्रसंगो का वर्णन है। उस समय के साधनो को एकत्र करके एक माला की तरह तैयार किया गया है। किसी भी कक्ष में जाये ऐसा प्रतीत होता है मानो उसी गूंथी हुई माला की एक-एक मोती को घुमा रहे हो। समस्त रचना तथा दूसरी सभी विशेषता है उसमें आधुनिकता भी है और परंपरा भी है।

आज के युग में सामान्य मनुष्य की आवश्यकता के अनुसार अत्यंन्त प्रभावित भळन बनवाया है। सुदंर रचना की है। काफी जगह है। अंदर जाते ही मन प्रफुल्लित हो जाता है। श्रद्धा और आस्था के साथ स्वामिनारायण भगवान कौन से साधनो का उपयोग करते थे, कैसा जीवन व्यतीत करते थे, उनके सहयोगी कैसे रहते थे यह सभी वस्तुऐ प्रस्तुत देखने को मिलती है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो हम उसी युग में वापस चले गये है। परंपरा और आधुनिकता इन दोनो का अद्‌भुत मिलन इस समग्र नवरचना में किया गया है। वास्तव में ये सभी वस्तुए संशोधन का विषय बनने योग्य है। अभ्यास का विषय बन सकती है, स्कूल के बच्चों को आजसे ढाईसो वर्ष पहले किस प्रकार का जीवन व्यतीत करते रहे होगे इसका ज्ञान लेने के लिये स्कूल से यात्राओं का आयोजन किया जायेगा। इस प्रकार बच्चों का भी उमंग और उत्साह का वर्धन होगा। एक नयी पेढी को संस्कार देने का कार्य करेंगे। वह भी ज्ञान मस्ती के साथ। पू. महाराजश्री ने एक बात का विशेषरुप से ध्यान रखा है कि समग्र भवन इकोफ्रन्डली बनवाया है। ग्लोबल वोर्मींग, कल्यामेट चेन्ज पर समग्र दुनिया में काम किया जा रहा है। आज जो भी हवा-पानी, नदीयाँ बची हुई है वह हमारे पूर्वजो की ही देन है। हमारे पूर्वजोने हमारे लिये यह सब कुछ एकत्रित करके बड़ी कठिनाई से बचाया है जिसका उपयोग हम आज कर पा रहे है। परंतु अब हमें भी हमारी आनेवाली पीढी के लिए भी कुछ बचाकर-छोडकर जाना है। इसीलिए हमें कुदरती संसाधनो का मर्यादित उपयोग करना होगा। संतो-शास्त्रों के उपायों का तथा मार्गदर्शन का पालन करना होगा। सोलार-एनर्जी का भरपूर प्रयोग इस म्युझियम में किया गया है। यह पहला इकोफ्रेन्डली म्युझियम है। यह उत्तम सौगाद है इसीलिए मैं सभी से वंदन-अभिनंदन-प्रार्थना करता हूँ की समय निकालकर म्युझियम में अवश्य पधारे। इस प्रकार हडबड़ी में नही, समय की पुरी फूरसद के साथ पधारें।

साक्षात्कार करके इसका उत्तम लाभ अवश्य लीजिए। उपर जो मौन मंदिर बनवाया जाय है, उसमें बाईब्रेरान फील होगा। जिस में पांच ही वस्तुए रखी गयी है। इस प्रकार मात्र प्रवेशद्वार की रचना ही मन को स्पर्श लेती है। मौन मंदिर में जाने पर काफी चलना पड़ता है, अंदर सीढीओं से चलकर उपर जाने पर भिन्न प्रकार की मानसिक शांति का अनुभव होता है। सामान्य रुप से हमारे सामने कोई एसा भवन नहीं आया जिसमें मानसिक शांति का अनुभव का प्राप्त हो ऐसा बहुत कम संभव है। कहीं दोसौ साल पुराना मंदिर हो और ऐसी अनुभूति हो वह बात भिन्न है। परंतु जो आज हमने महसूस किया है ऐसी अनुभूति बहुत कम स्थानो पर प्राप्त होती है।

जो हमें अनुभव हो रहा है वह आपको भी मौन मंदिर में जाने पर अवश्य अनुभव होगा। वास्तव में ऐसी अमूल्य भेट के लिए पू. बड़े महाराजश्री तथा पू. महाराजश्री तथा सभी संतो को खूब-भूक नमन के साथ विराम लेता हूँ।

- नरेन्द्रभाई मोदी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि जनवरी-२०१५

५१,०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर टींबा मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर कृते देव स्वामी।	११,०००/-	प.भ. धीरजभाई के. पटेल अमदावाद
		५,००१/-	प.भ. पटेल हेमलबहन प्राणजीवनभाई आद्रोजा-मोरबी ?
३१,०००/-	प.भ. पटले अमृतलाल हीरालाल अमेरिका पटेल रईबहन तथा सविताबहन (जतन बा परिवार) कृते भूमिबहन वी. पटेल (अमेरिका)	५,०००/-	प.भ. आसितकु मार विष्णु भाई डांगरवावाला - शिकागो
		५,०००/-	प.भ. भरतभाई अमीन चलोडावाला (यु.एस.ए.)
१५,०००/-	श्रीमती क्षमाबहन वी. पंड्या, श्री विभाकरभाई पंड्या अमदावाद (भालजा मंडल)	५,०००/-	प.भ. रमेशभाई अंबालाल पटेल
		५,०००/-	प.भ. प्रेमचंदभाई पाटडीया - हैद्राबाद।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (जनवरी-२०१५)

ता. १-१-१५	बीजलबहन पंकजभाई पटेल (यु.एस.ए.)
ता. २-१-१५	भाविन मनजी हीराणी (नारायणपर कच्छ) ह्युस्टन
ता. ४-१-१५	छायाबहन पंकजभाई पटेल कृते प्रहलादभाई - न्युजर्सी।
ता. १०-१-१५	नरनारायणदेव युवक मंडल - विल्सडन - दक्षिण भारत की सफल यात्रा के निमित्त।
ता. ११-१-१५	दशरथभाई पूनमभाई पटेल - असलाली
ता. १७-१-१५	प्रीती प्रहलादभाई पटेल कृते प्रहलादभाई (न्युजर्सी)
ता. १८-१-१५	जयंतीलाल गिरिधरलाल मिस्त्री - नवा वाडज।
ता. २२-१-१५	जयंतीभाई शंकरभाई पटेल - वडुवाला (यु.एस.ए.)

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के लिये श्री नरनारायणदेव के चांदी के १० ग्रा., २० ग्रा., ५० ग्रा. १०० ग्रा. के सिक्के श्री स्वामिनरायण म्युझियम में उपलब्ध है

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से "सदैव शास्त्र के अनुसार ही जीवन व्यतीत करना चाहिए"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

जिस प्रकार अमृत हमे अमरत्व प्रदान करता है उसी प्रकार शास्त्र हमें अभयता प्रदान करते हैं । हमारे लिए अभयता अधिक महत्व की है । इसीलिए सदैव शास्त्र के अनुसार हमें जीवन जीना चाहिए, और धर्म का त्याग नहीं करना चाहिए । क्योंकि धर्म का आचरण करते हुए जो कठिनाई आती है वह क्षणिक होती है । परंतु अधर्म के कारण जो दु:ख प्राप्त होता है वह बहुत कठिन समय होता है । धर्म का सुख अमर और दु:ख क्षणित होता है । परंतु धर्म का धारण करने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है । कायर होकर समाधान नही सोचना चाहिए । जीवन में धर्म के लिए समय की आवश्यकता होती है । जिस प्रकार खेत में वृक्ष का रोप करने के बाद फल की प्राप्ति होने के लिए राह देखनी चाहिए । जब तक फल की प्राप्ति का समय आता है तब तक क्या करने की आवश्यकता होती है ? अधिक ध्यान रखने की आवश्यकता होती है । अनेक प्रकार से ध्यान देने की आवश्यकता होती है उसी प्रकार भजन-भक्ति में भी बहुत ध्यान देना पड़ता है । जप, तप, धर्म, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य सब कुछ होना चाहिए । जब जिस की आवश्यकता हो देना चाहिए । जिस प्रकार शरीर को स्वच्छ रखने के लिए सभी चीजो की आवश्यकता होती है । उसी प्रकार आत्मा को भी खोराक की आवश्यकता होती है । हमें निश्चित करना है कि हमें सत्वप्रधान बनना है । उसके लिए उत्तम संकल्पो का निश्चय करना होगा । मन को अधिक स्थिर करना होगा । इस जगत में सुख तो है ही नही । हम को इस बात का ज्ञान भी है । हमने हजारों बार यह बात सुनी है । पानी कितना भी पारदर्शक और मीठा हो परंतु उसको मथने से माखन तो कभी नही निकलेगा । क्योंकि उसमें मक्खन तो है ही नही । जिस प्रकार इस बात का ज्ञान होने पर भी कि दूधमें ही मखन्न होता है पानी में नही उसी प्रकार जगत में सुख नही होने पर भी हम उसी मार्ग पर क्यों चलते है । हमारा मन दृढ क्यो नही है । सभी शास्त्रों का जो निचोड़ है जो सार है वह यही है कि जगत नाशवंत है । संसार में यथार्थ आनंद नहीं है । इसका कारण क्या है ? तो बार-बार इस शास्त्र का ज्ञान करने से संसार की माया से मुक्ति प्राप्त हो सकती है ।

एक घर में दो भाई थे । उस में बड़े भाई को धर्म, नियम, सत्संग सबकुछ पसंद था । परंतु छोटे भाई को यह सब मिथ्या लगता था । एक बार बड़े भाई के घर महात्मा

कथावार्ता करने पधारे । महात्माजीने उपदेश दिया । प्रवचन किये । परंतु छोटा भाई कथा में उपस्थित नही हुआ । अपने कमरे के बाहर खड़ा रहा परंतु कथा वार्ता के कुछ अंश सुनाई देने से कुछ रस उत्पन्न हुआ । दूसरे दिन वह रस और बढ गया । तीसरे दिन, चौथे दिन उत्सुक्ता और बढती गयी । पाँचवे दिन छोटा भाई स्वयं रुम में आकर महात्मा के सामने खड़ा हो गया । महात्माजीने खडे होकर उनके पाँव छूये लिये । छोटे भाईने कहा आप मेरे चरण क्यों स्पर्श कर रहे हैं । महात्मा ने कहा कि मैंने तो मात्र संसार का त्याग किया है । और संसार का त्याग तो प्रत्येक व्यक्ति को करना होता है । कोई स्वेच्छा से करता है, और यदि किसी की इच्छा नहीं होती है तो मृत्यु के भय को त्याग करना पडता है । ऐसा कोई मनुष्य इस जगत में नही है जिसे संसार का त्याग न किया हो । व्यक्ति की ईच्छा हो या न हो सभी को संसार का त्याग तो करना ही पड़ता है । परंतु मुझे आश्चर्य इस बात का है कि आपके भीतर ऐसी कौन सी शक्ति है कि आपने भगवान का ही त्याग कर दिया ? आपके चरण स्पर्श ईसीलिए कर रहा हूँ कि आप ऐसे महापुरुष कैसे बन गए ? महात्मा के शब्दों का इतना असर हुआ कि छोटा भाई उसी क्षण भक्त बन गया । कहने का अर्थ यह है कि जीवन में कब किस शब्द का असर हो जाय उसका हमें ज्ञान नहीं होगा । हम जो भी कुछ श्रवण करते है या पठन करते है उसको ग्रहण करने का आधार हमारी चित्तवृत्ति पर निर्भर है । हमारी चित्त की जो वृत्ति जिस प्रकार की होती है हमारी ग्रहण शक्ति भी उसी प्रकार की है । यदि हमारा चित्त १००% एकाग्र होता है तो श्रवण की हुई बाते एक ही बार में ग्रहण हो जाती है । परंतु यदि चित्त स्थिर न हो तो दो-चार बार भी सुनने पर ग्रहण करना कठिन होता है । इसका कारण क्या है ? तो कथा सुनते समय चित्त को शांत रखना चाहिए । वह हम पर निर्भर करता है । समुद्र कभी बहुत शांत होता है तो कभी लहरो के साथ तूफान पर होता है । उसका कारण क्या है ? यदि पवन शांत हो तो समुद्र शांत होता है । परंतु मन में यदि विचार रुपी वायु उथल-पाथल करते हैं तो मन अशांत हो जाता है । मन जब शांत होगा तो जगत के विचार नही आयेगे । और हमारा चित्त गवान में लगा रहेगा । कथा सुनने के बाद भी यदि, उसका पालन नही कर पाते है तो उसके पीछे कारण क्या है ? हम कथा एक कान से सुनते है और दूसरे कान से निकाल देंते है । संसार की भी बहुत सी बाते ऐसी होती है । जिसे एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देने मे ही हमारा हित है । परमात्मा के लीला चरित्रो को सुनकर उसे जीवन में उतारने का प्रयत्न करना चाहिए । यदि हम प्रयास करेंगे तो किसी भी प्रकार का अवरोधहमारा कल्याण बाधित नही कर सकते । इसीलिए प्रयास करके धर्म नियम - सत्संग में बने रहना चाहिए । कभी ऐसा भी होता है कि हमें मालून नहीं होता है कि हमारा चित्त शांत है और उस समय यह उपदेश हमारे जीवन में असर करने लगता है । इसीलिए कथा सुनते रहना चाहिए और जीवन में धर्म का ही पालन करना चाहिए । परमात्मा ऐसा बल और धैर्य आप सभी को प्रदान करें कि आप लोग धर्म सहित भक्ति करें ऐसी नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

समस्त सत्संगी को सूचना

समस्त संत-हरिभक्तों को सूचित किया जाता है कि अपने गाँव में शहर के मंदिर में किसी प्रसंग पर या किसी विशिष्ट प्रयोजन के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शोभायात्रा आज के बाद कभी निकालना नही है, इसकी जानकारी होना सभी को परम आवश्यक है ।

सूचना

(१) संत-हरिभक्तों की तस्वीर या नाम किसी विशेष कारण से रह गाय हो तो क्षम्य समझियेगा ।

(२) सत्संग बाल वाटिका, प्रश्नपेटी सत्संग समाचार तथा भेंट की स्मरणिका इत्यादि आगामी अंक में प्रकाशित होगा ।

अमदावाद श्री नरनारायणदेव टेम्पल बोर्ड के सदस्य गण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव महोत्सव प्रसंग में "श्री स्वामिनारायण मासिक" के आजीवन सदस्यों को भेंट देने वाले श्रीहरि के प्रिय हरिभक्त

- अ.नि.प.भ. शिवजी धनजी पिंडोरीया ध.प. वालबाई शिवजी पिंडोरीया प.भ. मावजीभाई पिंडोरीया ध.प. प्रेमीलाबहन मावजी पिंडोरीया, अनिष जेनिका, निता आथमणुं सुखपर (कच्छ) बुलवीच
- प.भ. कांतिलाल केशरा भूडीया ध.प. जसवंतीबहन कांतिलाल भूडीया फोटड़ी (कच्छ) ईश्ट लंडन।
- प.भ. के. के. जेसाणी बलदिया कच्छ-विल्सडन
- प.भ. जेठालाल सवाणी लंडन-केरा (कच्छ)
- डाह्याभाई चेलाभाई बूडीया - कालीयाणा
- प.भ. अनि. चंद्रिकाबहन नविनचंद्र मारफतीया ह. घनश्याम केडोर् कंटकी अमेरिका
- प.भ. महादेवभाई चतुरभाई पटेल (धरमपुरवाले) अमदावाद, ह. संदीप पटेल
- प.भ. अरविंदभाई सोमाभाई पटेल मोखासणवाले फलोरीडा।
- प.भ. प्रविणबाई चतुरदास पटेल - माणसा
- प.भ. देवेन्द्रभाई नरसीभाई डोडीया - ह. अ.सौ. हंसाबहन बोपल।
- प.भ. भिखुभाई जेठुभाई मोरी - कालियाणा।
- प.भ. डॉ. जी. के. पटेल - ह. कुसुमबहन मेहसाणा
- प.भ. मधुभाई गोरधनभाई बाढिया - अहमदाबाद
- प.भ. अरविंदभाई पी. ठक्कर - शीतल मोटर्स।
- एक हरिभक्त बहन।
- एन. देसाई पेपर प्रा.लि. - अहमदाबाद।
- प.भ. अतुलभाई पोथीवाला - अहमदाबाद।
- प.भ. जतीनभाई पटेल - कांकरिया।
- प.भ. बूडीया रामूबहन देवुभाई - कालियाणा।
- प.भ. रमेशभाई मेवाडा - कोन्ट्राकटर - अहमदाबाद
- प.भ. जीगनेशभाई पटेल - अहमदाबाद - लंडन
- प.भ. कांतिभाई नरसिंहभाई पटेल - देवपुरावाडा
- प.भ. अमृतभाई कालिदास पटेल - गुलाबपुरा
- प.भ. डॉ. नटुबाई पटेल बोपल
- प.भ. प्रवीणभाई मंगलदास पटेल - अहमदाबाद चि. हिरल, केयुर, पौत्री भविष्या के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में।
- प.भ. धनजीबाई च. हिराणी (कच्छ)
- प.भ. मावजीभाई करशन सभाडीया भुज-कच्छ
- प.भ. हिरजीबाई कुंवरजीभाई राबडीया - सरली (कच्छ)
- प.भ. शामजी कुंवरजी राबडीया - सरली (कच्छ)

श्री नरनारायणदेव महोत्व के प्रसंग में वचनामृत (अंग्रेजी) का प्रकाशन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वा. ब्र. राजेश्वरानंदजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव महोत्सव के प्रांगण में केरा (कच्छ) वर्तमान मं लंडन प.भ. जेठालाल स्वामी द्वारा संपादित अंग्रेजी वचनामृत का सुंदर प्रकाशन किया गया है। प.भ. जेठालाल द्वारा भेंट मिलते ही यह अलौकिक पुस्तक ५०/- रुपये में अमदावाद मंदिर के साहित्य केन्द्र पर मिलेगा।

श्री नरनारायणदेव महोत्सव में नये आजीवन सदस्यों को सूचना

श्री नरनारायणदेव महोत्सव में श्री स्वामिनारायण मासिक के जो आजीवन सदस्य बने हैं उनके रसीद में सदस्य नंबर गलत लिखा गया है उस नंबर के बदले में जब आपके पास अंक आये। तो प्लास्टिक के कवर पर लिखा जो नंबर आये उसे स्थाई मानना है, यह सभी के जानकारी हेतु लिखा गया है।

સમાચારપત્રોની નજરે

અમદાવાદ

ઉત્સવ | ધર્મ સાથે સમાજ કલ્યાણના કાર્યો કરાશે

શહેરમાં પાંચ દિવસીય નરનારાયણ દેવ મહોત્સવ: 5 લાખ ભક્તો જોડાશે

ભાસ્કર ન્યૂઝ. અમદાવાદ

સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના સૌથી પ્રાચીન સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુર દ્વારા પાંચ દિવસીય નરનારાયણદેવ મહોત્સવનું આયોજન 24થી 28 ડિસેમ્બર દરમિયાન કરાયું છે.

આ પ્રસંગે ભગવાન સ્વામિનારાયણે આજથી 192 વર્ષ પહેલા જે મંદિર બંધાવી તેમાં ...

મહોત્સવમાં ધાર્મિક આયોજનો

- 251 ગામોમાં સત્સંગ સભાઓ
- 51 મિનિટની 251 ગામડાઓમાં ધૂન
- 1 કરોડ 25 લાખ જનમંગલ, 5100 વચનામૃત, 5100 ભક્તચિંતામણિ ...
- ... સ્વામિનારાયણ મેગેઝિન સત્સંગ ઝુંબેશ

અમદાવાદ

નરનારાયણ દેવ મહોત્સવ | 33 હજારથી વધુ મહિલાઓને મુખ્યમંત્રીનું સંબોધન

'રાજ્યમાં દીકરીઓનો જન્મદર વધ્યો'

■ મહોત્સવના ત્રીજા દિવસે મહિલા દિનની ઉજવણી

ભાસ્કર ન્યૂઝ. અમદાવાદ

મોટેરા ખાતે ઉજવાઈ રહેલા કાલુપુર મંદિરના નરનારાયણદેવ મહોત્સવનો તૃતીય દિવસ મહિલા દિન તરીકે ઉજવાયો હતો. આ પ્રસંગે ખાસ ઉપસ્થિત રહેલા મુખ્યમંત્રી આનંદીબેન પટેલે સમારંભમાં હાજર 33 હજારથી વધુ મહિલાઓને સંબોધતાં જણાવ્યું હતું કે, આપણે બેટી બચાવો-બેટી ભણાવોના અભિયાનથી દર 1 હજાર દીકરાએ 904 દીકરીઓના જન્મદરે પહોંચ્યા છીએ.

ગુરુવારે સ્વામી બહુઓને યજ્ઞોપવીત સંસ્કાર આપવામાં ...

કાલુપુર મંદિરે મહાઆરતી યોજાઇ

સ્વામિનારાયણ કાલુપુર મંદિર ... મહાઆરતી ... કરવામાં આવી હતી. ...

ભુજ અને સારંગપુર મંદિરના ... સ્વામી સહિત 500થી વધુ સાધુઓ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. આનંદીબેને જણાવ્યું હતું કે, નારી શક્તિના સામર્થ્યથી વ્યસનમુક્ત, કુરિવાજો મુક્ત, સર્વાંગી વિકાસ ... સમાજનું નિર્માણ ...

મોટેરામાં મહિલા દિન મનાવાયો

મોટેરા ખાતે શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવના ... દિન ઉજવણીમાં રાજ્યના મુખ્યમંત્રી આનંદીબેન પટેલે ... સાથે સર્વાંગી સમરસ ... સમાજ નિર્માણની ... કર્યું હતું ...

નરનારાયણ મહોત્સવમાં પરિવાર દિન ઊજવાયો, આજે અન્નકૂટ

ભાસ્કર ન્યૂઝ. અમદાવાદ

નરનારાયણ દેવ મહોત્સવના ચોથો દિવસ પરિવાર દિન તરીકે ઉજવાયો હતો. પધારેલા મહેમાનોએ તથા વક્તાઓએ પરિવારનો મહિમા કાર્યક્રમમાં વર્ણવ્યો હતો. શનિવારે સવારે મોટેરા ગામમાં આવેલા પ્રાચીન હનુમાન મંદિરેથી મહોત્સવ સ્થળ સુધી શોભાયાત્રાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. શોભાયાત્રામાં લાલજી મહારાજ અને મહંતો જોડાયા હતાં. શનિવારના રોજ 25થી 30 બટુકોને જનોઈ પણ આપવામાં આવી હતી. મહોત્સવમાં ભાજપના નેતાઓ પણ આવી પહોંચ્યા હતાં. તેઓએ પણ તેમના પ્રવચનમાં પરિવારનું મહત્વ હરિભક્તોને સમજાવ્યું હતું. ... સંખ્યામાં હરિભક્તો આ ...

કાલુપુર મંદિરે શનિવ...

મહોત્સવના દર્શન ... રહ્યા છે. રવિવારના ... મંદિર ખાતે ... વર્ષી નરનારાયણદેવનો અભિષેક કરવામાં આવશે. બપોરે ભગવાનને ભવ્ય અન્નકૂટ ધરાવવામાં આવશે.

શ્રીનરનારાયણદેવ મહોત્સવ સંપન્ન 5 દિવસમાં 7 લાખ ભાવિકો ઉમટ્યા

નવગુજરાત સમય > અમદાવાદ

શહેરના મોટેરા ખાતે બુધવારથી શરૂ થયેલા 'શ્રીનરનારાયણ દેવ મહોત્સવ'ની રવિવારે ધર્મકુળ- આચાર્ય કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી, પૂ.તેજેન્દ્રપ્રસાદજી અને વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજીની નિશ્રામાં પૂર્ણાહુતિ થઈ હતી. આ પ્રસંગે કાલુપુર-સ્વામિનારાયણ મંદિર ખાતે ભવ્ય અન્નકૂટનું આયોજન થયું હતું. જેમાં મોટી સંખ્યામાં ભક્તો દર્શનાર્થે ઉમટી પડ્યા હતા.

આ પ્રસંગે આચાર્ય કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજે કહ્યું કે આપણે બધા જ એક પરિવાર તરીકે એકતા, સંગઠન સાથે રહેવાનું છે. ઉપરાંત, આ જે મહોત્સવ સુખપૂર્વક સંપન્ન થયો છે, તે પણ શ્રીનરનારાયણદેવનાં આશીર્વાદ છે. સાથે જ મહોત્સવમાં જે રીતે આરોગ્ય, પર્યાવરણ, સ્વચ્છતા વગેરે ઉપર ભાર મૂકવામાં આવ્યો હતો, તે જ રીતે તેને આપણે દૈનિક રીતે અપનાવીને પર્યાવરણ જાળવણી, સ્વચ્છતા અને આરોગ્યની કાળજી રાખવાની છે. સર્વના સહયોગથી મહોત્સવ સંપન્ન થયો છે ત્યારે મહાના માધ્યમથી આપણે વિશ્વશાંતિ માટે પણ પ્રાર્થના કરી છે અને જગે જ સુખ-શાંતિ પ્રવર્તે.

આ અંગે વિગતો આપતાં આનંદપ્રસાદ સ્વામીએ જણાવ્યું કે મહોત્સવનાં પાંચ દિવસ દરમિયાન લગભગ સાત લાખ જેટલા દર્શનાર્થીઓ ભારતભરમાંથી અને વિદેશોથી આવ્યા હતા. જ્યારે અહીં યુવ માટે જે વિશિષ્ટ આયોજન હતું, તેમાં પણ દોઢ લાખ લોકોએ દર્શન કર્યા હતા. જ્યારે ત્રિદિવસીય મહાવિષ્ણુયાગનાં પણ મોટી સંખ્યામાં લોકોએ દર્શન કર્યા હતા. આ પ્રસંગે રાજ્યભરમાંથી સાધુ-સંતો, મહંતો ઉપસ્થિત રહ્યાં હતાં. જ્યારે રાજકીય, સામાજિક અગ્રણીઓ પણ ઉપસ્થિત રહ્યાં હતાં.

તેમણે કહ્યું કે શ્રીનરનારાયણદેવને જે અન્નકૂટ ધરાવવામાં આવ્યો હતો તેનાં દર્શન માટે લોકો મોટી સંખ્યામાં ઉમટી પડ્યા હતા. સાથે જ જિર્ણોદ્ધાર થયેલા સુવર્ણ સિંહાસનનાં પણ લોકોએ દર્શન કર્યાં હતા અને ધન્યતાનો અનુભવ કર્યો હતો.

કાલુપુર સ્વામિનારાયણ મંદિર ખાતે અન્નકૂટ દર્શન માટે ભક્તોની ભીડ જામી

સમાચારપત્રોની નજરે

નવગુજરાત સમય

સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુરનો પાંચ દિવસના નરનારાયણ દેવ મહોત્સવમાં

NRI હરિભક્તો માટે હાઇજીનિક પ્રસાદ

ભાસ્કર ન્યૂઝ . અમદાવાદ

સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના પ્રાચીન સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુર દ્વારા પાંચ દિવસીય નરનારાયણદેવ મહોત્સવનો પ્રારંભ બુધવારના રોજ થયો છે. પૂ.આચાર્ય 1008 કૌશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજ તથા પૂ. મોટામહારાજ તેજેન્દ્રપ્રસાદજી ... વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી ...

... હોટલ અને ટેક્સીની સુવિધા કરી આપવામાં આવી છે. તેમના માટે મહોત્સવના સ્થાને ખાસ હાઈજીનિક પ્રસાદ આપવામાં આવે છે. આજે ... આનંદીબહેન પટેલ ... આવવાના છે. ... મહિનામાં ... એનઆર... તમામને રહેવા માટે અન...

અમદાવાદમાં આવતા હોય છે. તેની સાથોસાથ હાલમાં ધનુર્માસ ચાલતો હોઈ લગ્ન જેવા શુભકાર્યો પણ થઈ શકતા ન હોવાથી મોટી સંખ્યામાં એનઆરઆઈ હરિભક્તો આ મહોત્સવમાં ભાગ લઈ રહ્યા છે. તેમની સગવડ સાચવવાના હેતુથી મોટેરા ગામ ખાતે જ્યાં મહોત્સવ શરૂ યોજવામાં આવ્યા છે ત્યાં ખાસ વ્યવસ્થા ઊભી કરવામાં આવી છે. જેમાં એનઆરઆઈ ભક્તોને ફાવે તેવો પ્રસાદ રોજ જમણમાં ... આવશે ...

અલગથી રસોડાની વ્યવસ્થા કરાઇ છે

NRIની સુવિધા માટે મહોત્સવ સ્થળ પર અલગથી રસોડું ઊભું કરાયું છે. તેમાં વધારે તળેલું કે તીખું જમવાનું બનાવાતું નથી. મરી-મસાલા તથા બીજા ખાદ્યપદાર્થો સિવાયનું શુદ્ધ સાત્વિક અને હાઇજેનિક જમવાનું ખાસ બનાવાયું છે. વિદેશથી આવેલા હરિભક્તો માટે કુલ 37 હોટેલો બુક કરાઇ છે.

» સમીરભાઇ વકીલ, હરિભક્ત

ગુજરાત સમાચાર

મોટેરામાં યો... મહોત્સવમાં પાંચ લાખ હરિભક્તો ભાગ લેશે

આજથી પાંચ દિવસીય 'નરનારાયણદેવ મહોત્સવ'નું ભવ્ય આયોજન

અમદાવાદ, મંગળવાર

કાલુપુર ખાતે આવેલા સ્વામિનારાયણ મંદિર દ્વારા બુધવારથી પાંચ દિવસીય 'નરનારાયણદેવ મહોત્સવ'નો પ્રારંભ થશે. ભગવાન સ્વામિનારાયણે આજથી ૧૯૨ વર્ષ અગાઉ જે મંદિર બંધાવી તેમાં શ્રી નરનારાયણ દેવ પધરાવ્યા હતા તે મંદિરનો જિર્ણોદ્ધાર કરવામાં આવ્યો છે. આ મહોત્સવ દરમિયાન જિર્ણોદ્ધારિત મંદિર, નૂતન સુવર્ણ સિંહાસનનું ઉદ્‌ઘાટન કરાશે. ૨૮ ડિસેમ્બર સુધી યોજનારો આ મહોત્સવ મોટેરા ગામ ખાતે આવેલા નરનારાયણ નગર ખાતે ઉજવવામાં આવશે. આ મહોત્સવમાં દેશ-વિદેશથી પાંચ લાખ હરિભક્તો ભાગ લેશે. આચાર્ય ૧૦૦૮ કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી તથા મોટા મહારાજ તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજની નિશ્રામાં આયોજિત આ ભવ્ય મહોત્સવમાં માત્ર ધર્મલક્ષી કથા પારાયણ-યજ્ઞ-ભજન-ભક્તિ જ નહીં પરંતુ સમાજ કલ્યાણ-ઉત્થાનના પણ કાર્યો થશે. બુધવારે સવારે પોથીયાત્રા નીકળશે. મહોત્સવના પાંચેય દિવસ દરમિયાન વિવિધ દિવસની ઉજવણી કરવામાં આવશે. બુધવારે આરોગ્ય, ગુરુવારે પર્યાવરણ, શુક્રવારે મહિલા, શનિવારે પરિવાર દિન તરીકે ઉજવવામાં આવશે. શનિવારે નરનારાયણ દેવ યાત્રાનું આયોજન કરાયું છે. રવિવારે કાલુપુર મંદિર ખાતે બપોરે ૧૨:૦૦થી ૩:૦૦ દરમિયાન અન્નકૂટ ધરાવવામાં આવશે. આ અન્નકૂટનો પ્રસાદ તમામ આશ્રમો, માનસિક વિકલાંગ બાળકોની સંસ્થાઓમાં વહેંચવામાં આવશે.

... અગાઉ ૨૩મી ડીસેમ્બરે ... થવાની શક્યતા હતી ... તૈયાર કરવ... ટેકનિકલ ખામીઓને ...

દિવ્ય ભાસ્કર

કાલુપુર સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં ભગવાનને છપ્પનભોગ ધરાવાયો

ભાસ્કર ન્યૂઝ. અમદાવાદ

નરનારાયણ દેવ મહોત્સવનો અંતિમ દિવસ રવિવારના રોજ યોજા... હતો. મોટેરા ગામ ખાતે ... દિવસે મહોત્સવમાં ભાગ ... માટે હજારોની સંખ્યામાં હરિ... અમદાવાદ શહેર અને આસ... વિસ્તારોમાંથી આવી... હતાં. સ્વામિનારાયણ સાધુઓ... ગુજરાતભરના ... ખાતે આવ્યા હતાં. મોટેરા ગામ ખાતે ... આ પ્રસંગે કાલુપુર મંદિરમાં ... મંગળા આરતી ... નરનારાયણ દેવની ... સવારે ૬.૩૦થી ૭ ... કરાઈ હતી. ... ભગવાન પર અભિષેક ... દરમિયાનમાં ભગવાન ... કરવામાં આવ્યો હતો. ત્યારબાદ ... સવારે શણગાર આરતી કરવામાં આવી હતી. બપોરે કાલુપુર મંદિર ખાતે ભગવાન સ્વામિનારાયણ ... અન્નકૂટ ... છપ્પનભોગ ... આવ્યો હતો. હજારો ... હરિભક્તો અન્નકૂટના ... માટે આવી પહોંચ્યા ... હરિભક્તોને મહિલા ... મંદિરમાં દર્શન કરવા માટે ... દેવાયા હતાં.

કાલુપુર મંદિરે શનિવારે ભ...

... મહોત્સવના દર્શન કરવા ... રહ્યા છે. રવિવારે ... મંદિર ખાતે વહેલ... વર્ણી નરનારાયણ ... કરવામાં આવશે. ... ભવ્ય અન્નકૂટ ધર...

કાલુપુર મંદિરે મહાઆરતી યોજાઇ

સ્વામિનારાયણ કાલુપુર મંદિરે શુક્રવારના રોજ વિશિષ્ટ શણગાર કરવામાં આવ્યો હતો. આ પ્રસંગે હજારો દીવડાઓની આરતી પણ કરાઈ હતી. મહોત્સવ સ્થળ પર નરનારાયણદેવ મહિલા મંડળના બહેનો દ્વારા સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ યોજવામાં આવ્યો હતો.

भोजनप्रसाद

भोजनप्रसाद

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

मानवंता महेमानो

Registered under RNI NO-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd. PSO on 11 the every month under postal REG. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd. valid up to 31-12-2017

(१) श्री नरनारायणदेव महोत्सव-प्रसंग पर आयोजित ब्लड डोनेशन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री । (२) महिलादिन के निमित्त गुजरात की मुख्यमंत्री श्रीमती आनंदीबहन पटेल को "स्त्री सशक्तिकरण" योजना के लिये ११ लाख रुपये का चेक अर्पण कर रही है प.पू.श्री राजाजी।

Praful Kharsani